DRAFT



स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन
राजस्थान

प्रिंसिपल्स-हैंडबुक

विद्यालय प्रधानाचार्यों हेतु कार्यक्रम पुस्तिका

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्
माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

1. संदेश

प्रिय संस्था प्रधान साथियों,

समन्वित विद्यालय में आपके द्वारा दिए जा रहे नेतृत्व के लिए आपको धन्यवाद। राज्य सरकार आपके प्रयासों की सराहना करती है और यह मानती है कि आप समन्वित विद्यालय को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान बनाने के लिए कृतसंकल्प हैं। निश्चित रूप से यह सराहनीय बात है कि आप राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता, विषम भौगोलिक परिस्थिति और सामाजिक विभिन्नता की स्थिति वाले परिवेश के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए तत्पर होकर कार्य कर रहे हैं।

जैसा कि आपको विदित है समन्वित विद्यालयों की स्थापना के पीछे राज्य सरकार का सपना है राज्य स्तर पर 6 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा हेतु गुणवत्ता पूर्ण संस्थान उपलब्ध कराना। इस प्रयास का आधार यह है कि **''सब बच्चे सीख सकते हैं और सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं।**''

हम सब जानते हैं कि विद्यालय में अनियमित उपस्थिति और बीच में ही विद्यालय छोड़ देने की दर प्राथमिक कक्षाओं में अधिक होती है। उच्च प्राथमिक कक्षाओं से माध्यमिक कक्षाओं तक आते–आते बहुत से बच्चे कमज़ोर शैक्षिक स्तर के कारण विद्यालय बीच में ही छोड़ देते हैं और अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं।

समन्वित विद्यालय गुणवत्तायुक्त शिक्षा के केंद्र बनें इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय की प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर विशेष ध्यान दिया जाए। यदि प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों की नींव मजबूत होगी तो आगे की कक्षाओं में बच्चे बेहतर प्रदर्शन करेंगे। इसका प्रभाव जहाँ बच्चों की नियमितता पर होगा, वहीं बीच में ही स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों की संख्या में भी कमी आएगी।

आपके मजबूत नेतृत्व में समन्वित विद्यालय शिक्षा के अग्रणी संस्थान के रूप में उभरे इसके लिए राज्य सरकार विशेष प्रयास कर रही है। इस प्रयास के क्रम में राज्य सरकार समन्वित विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली का एक समन्वित कार्यक्रम प्रारम्भ कर रही है। इस कार्यक्रम का नाम है **'स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटी एज्यूकेशन'**

इस समन्वित कार्यक्रम के बारे में सारगर्भित जानकारी देने के लिए एक हैंडबुक तैयार की गई है। इस हैंडबुक में कार्यक्रम के उद्देश्यों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई है। मार्गदर्शिका में बताया गया है कि समन्वित कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में किस प्रकार की गतिविधियाँ होंगी एवं संस्था प्रधान की क्या भूमिका होगी। 'एसआईक्यूई' कार्यक्रम के सहज एवं सफल संचालन तथा नियमित समीक्षा के लिए किस प्रकार की व्यवस्था की गई है इस पर भी पुस्तिका में जानकारी दी गई है।

आशा है यह 'संस्था प्रधान–हैंडबुक' समन्वित विद्यालयों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा के केंद्र बनाने में आपके लिए सहायक होगी।

शुभकामनाओं सहित !

———————————————

———————————————

———————————————

2. संदर्शिका के बारे में

प्रिय साथियों,

जैसा कि आप जानते हैं कि **'स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन'** कार्यक्रम अपने आरम्भिक चरण में प्राथमिक कक्षाओं पर केन्द्रित है। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य सभी बच्चों के शैक्षिक स्तर को उनके कक्षा–स्तर के अनुरूप लाना है। हमारे विद्यालयों में आ रहे बच्चों के परिवेश में बहुत विविधता है। अधिकतर बच्चों को पारिवारिक स्तर पर आवश्यकता अनुरूप अकादमिक समर्थन भी प्राप्त नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में इस लक्ष्य की प्राप्ति एक कठिन कार्य है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि इन कक्षाओं में उपलब्धि स्तर को बढ़ाए बिना राज्य की शैक्षिक स्थिति में गुणात्मक विकास संभव नहीं है। ऐसे में संस्था प्रधान के रूप में आपकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रभावी भूमिका तभी निभाई जा सकती है जब आप सब इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में समग्र रूप से अवगत हों एवं तदनुरूप विद्यालय स्तर पर अपनी भूमिका के संबंध में पूर्णतः जागरूक एवं सक्रिय हों। संस्था प्रधानों हेतु निर्मित यह हैण्डबुक मुख्यतः उक्त विचारों पर केन्द्रित है।

हम सभी बच्चों की उपलब्धियों में बेहतरी चाहते हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि सीखने–सिखाने की मौजूदा प्रक्रियाओं में बदलाव के बिना सतही प्रयासों से नतीजों और परिणामों को बदला नहीं जा सकता है। अर्थात् अगर हम अपनी कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में बदलाव नहीं लायेंगे तो उन प्रक्रियाओं पर आधारित परिणाम भी नहीं बदले जा सकते हैं। सार रूप में कहा जाए तो कार्यक्रम का मुख्य विचार यह है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में ऐसे गुणवत्तापूर्ण उपयुक्त बदलाव लाए जाएं जिनके आधार पर बेहतर नतीजे प्राप्त किए जा सकें और सभी बच्चे अपेक्षित शैक्षिक स्तरों को प्राप्त कर सकें।

आप से कार्यक्रम की यह अपेक्षा है कि संस्था–प्रधान के रूप में आप सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में कार्यक्रम के लक्ष्यों के अनुरूप बदलावों को सुनिश्चित करें। इस अपेक्षित बदलाव की संकल्पना की मुख्य तौर पर दो प्रक्रियाएँ हैं ; **बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन।** अपने विद्यालय में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को बाल–केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित बनाते हुए (जो कि शैक्षणिक रूप से सतत एवं व्यापक आकलन के बिना प्रभावी रूप से लागू नहीं की जा सकती) बेहतर परिणामों को सुनिश्चित करने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। मित्रों यह तब ही संभव है जब आप खुद इस प्रक्रिया की बहुत स्पष्ट समझ रखते हैं।

यह पुस्तिका आपको इस कार्यक्रम के मूल सन्दर्भों को समझने में मदद करेगी। साथ ही आपको प्राथमिक स्तर की कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं की गहरी समझ बनानी होगी, इसके लिए विषयवार स्रोत पुस्तिकाएँ बनाई गई हैं। आपसे यह अपेक्षा है कि आप इन दोनों का विस्तृत अध्ययन करेंगे और बदलाव के लिए अपेक्षित समझ के निर्माण में सक्रियता से संलग्न होंगे।

इस समझ के जरिए से ही आप बेहतर अकादमिक नेतृत्व प्रदान कर पायेंगे जो संस्था प्रधान के रूप में आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यभार है। सही मायनों में गुणवत्तापूर्ण बदलाव केवल अच्छे प्रशासनिक नेतृत्व से नहीं किए जा सकते हैं, जब तक कि उसके आधार में अकादमिक नेतृत्व एवं सम्बलन न हो। इस संबंध में हमें कुछ बातें स्पष्टतः समझ लेनी चाहिए।

- सर्वप्रथम अकादमिक नेतृत्व का मायना यह नहीं है कि हम अपने शिक्षक साथियों की कमियों को रेखांकित मात्र करते रहें। अकादमिक नेतृत्व का अर्थ है कि आपके साथ विचारों के आदान–प्रदान एवं आपके द्वारा दिए गए सुझावों या किसी भी अन्य ज़रिए से आपके साथी कुछ सीख सकें और उसे अपनाने हेतु प्रेरित हो सके। साथ ही अपने स्तर पर उस दिशा में कार्य और विचार को बढ़ा पाएँ।

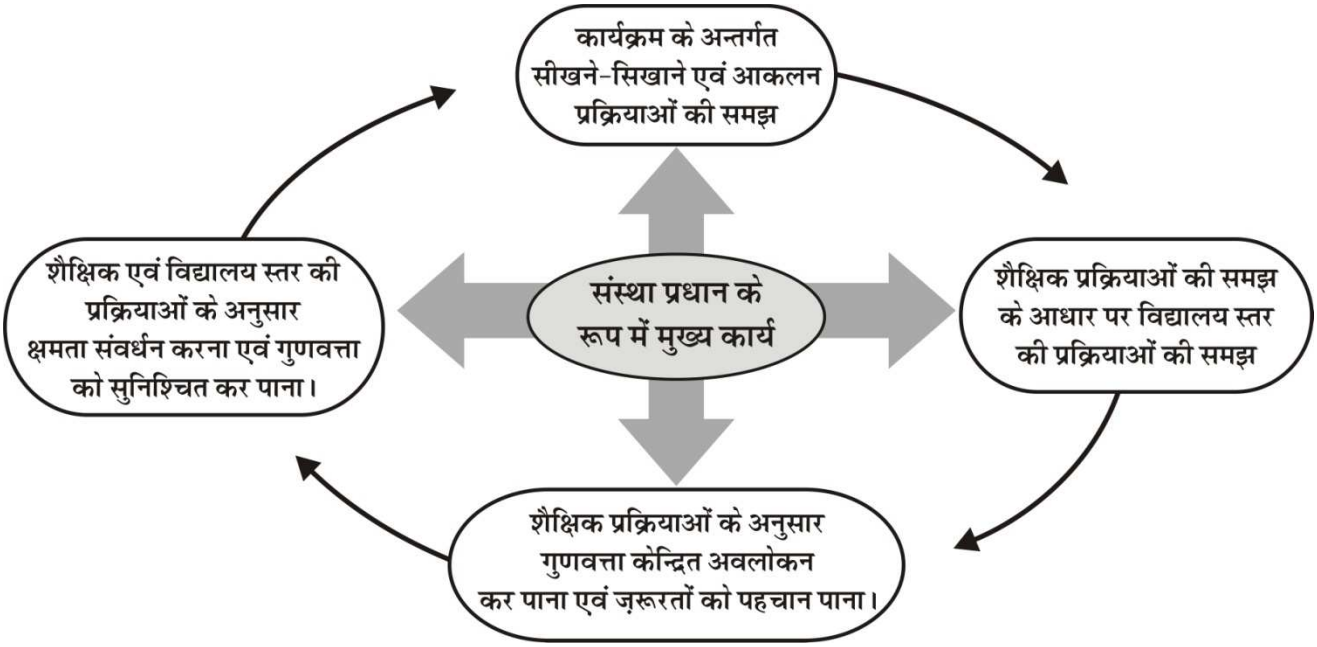
- दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में बदलाव शिक्षक साथियों के साथ मिलकर ; नवीन एवं सटीक सुझावों और अभ्यासों के आधार पर ही सुनिश्चित किया जा सकता है।

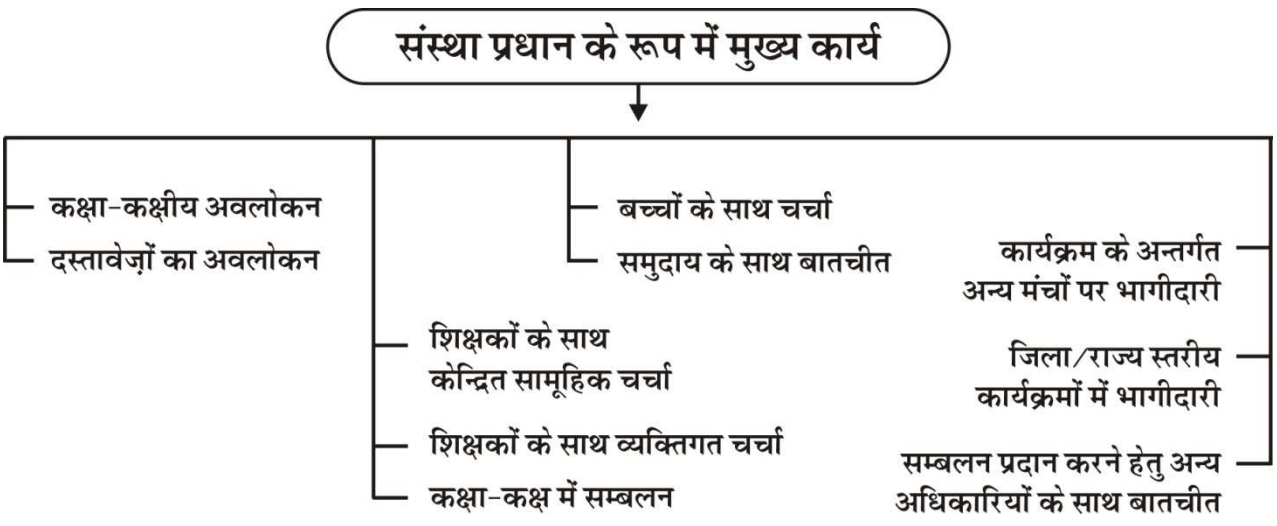
यह स्पष्ट है कि एक संस्था प्रधान शिक्षक साथियों के सहयोग से कक्षा–कक्ष में आ रही सभी चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम हो सकता है परन्तु अपेक्षित बदलाव लाने हेतु प्रमुख चुनौतियों के संदर्भ में एवं शुरुआती दौर में हमें इस भूमिका को निभाना होगा ? इस प्रक्रिया में शिक्षक साथियों को साथ लेकर चलना होगा जिससे उनका क्षमता–संवर्धन हो सके। हो सकता है कि सर्वप्रथम वे आपके उदाहरण से सीखें, दूसरे चरण में आपके गहन सम्बलन की जरूरत हो, तीसरे चरण में आपके कम सम्बलन से भी वे चुनौतियों को सुलझा पाएँ और अंततः वह स्वयं ही चुनौतियों का निवारण कर लें। अगर हम सही मायनों में गुणवत्तापूर्ण बदलाव देखना चाहते हैं तो इन चरणों से अनुशासनात्मक ढंग से गुजरना होगा। हमें सही मायनों में यह समझना होगा कि अकादमिक नेतृत्व कैसे किया जाए, उसके चरण क्या हैं और उसके लक्ष्य क्या हैं।

इस क्षमता सम्वर्धन एवं सम्बलन की प्रक्रिया को विद्यालय स्तर पर कैसे किया जा सकता है और उसे किस प्रकार सीखने–सिखाने कि प्रक्रिया से जोड़ा जा सकता है, यह प्रश्न इस पुस्तिका का केन्द्रीय बिन्दु है। इस पुस्तिका में विद्यालय स्तर पर कुछ ऐसी ही प्रक्रियाओं की रूपरेखा दी गई है जो प्रभावी अकादमिक नेतृत्व को सुनिश्चित करने हेतु कुछ न्यूनतम प्रक्रियात्मक सुझाव आपके समक्ष रखती हैं। इसके पीछे यह विचार है कि अगर आप विद्यालय स्तर पर सभी शिक्षकों के

साथ इन्हें प्रभावी रूप से लागू कर पाते हैं तो ज़रूर ही विद्यालय एवं कक्षा–कक्ष में ऐसे बदलाव आ सकते हैं जिनसे कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। इस सम्बन्ध में यह बात कहना आवश्यक है कि ये प्रक्रियाएं सुझाव के तौर पर हैं। आप अपने संदर्भ के अनुसार उन्हें और प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त बदलाव कर सकते हैं। इस पुस्तिका में आवश्यक विद्यालय स्तरीय प्रक्रियाओं का विवरण एवं उनसे जुड़े प्रपत्र दिए गए हैं जिन्हें आप अपने शिक्षक साथियों के साथ जरूर साझा करें जिससे उन्हें भी यह पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षा है। विद्यालय के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कैसे इन बिन्दुओं पर प्रभावी काम किया जा सकता है, यह कार्य शिक्षक–समूह के साथ मिलकर निर्धारित किया जाना लाभप्रद होगा।

कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्था प्रधान की भूमिका को नीचे दिए गए चित्रण से सार रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –





इस पुस्तिका का उपयोग कैसे किया जाए –

यह पुस्तिका कार्यक्रम के सभी प्रमुख बिन्दुओं पर स्पष्ट समझ बनाने में सहायक होगी। इस हेतु इसे पूरी तरह से पढ़ना एवं समझना आवश्यक होगा। इस पुस्तिका में कार्यक्रम का अवधारणा पत्र दिया गया है और संस्था प्रधान की अपेक्षित भूमिकाओं पर लेख दिया गया है। कार्यक्रम की अवधारणा एवं उसके अनुरूप अपनी भूमिका पर स्पष्टता बनाने हेतु इन्हें कई बार पढ़ा जा सकता है। इसी प्रकार बालकेन्द्रित शिक्षण तथा समग्र एवं सतत मूल्यांकन पर भी अवधारणात्मक समझ पत्र सम्मिलित किए गए हैं। जिस अकादमिक नेतृत्व की अहम भूमिका की हम बात कर रहे थे उस दृष्टि से यह पत्र बहुत महत्त्वूपर्ण है। इन्हें समझना मात्र ही काफी नहीं होगा परन्तु इन पर गहरा चिंतन–मनन करते हुए आत्मसात करने की आवश्यकता होगी। इस कारण से ये पत्र कई बार पढ़े जाने चाहिए और साथी शिक्षकों को भी पढ़ने के लिए दिए जाने चाहिए। साथ ही इन सैद्धान्तिक पक्षों पर उनके साथ खुला संवाद किया जाना चाहिए।

हैंडबुक में कक्षा अवलोकन, शिक्षकों के साथ संवाद और दस्तावेज़ों के अवलोकन से संबंधित कुछ प्रक्रियात्मक पत्र एवं प्रपत्र भी शामिल किए गए हैं। इन्हें आपको नियमित रूप से अवलोकन और चर्चा आदि के उपयोग में लाना है। आप प्रत्येक पाक्षिक योजना पर चर्चा एवं दिए गए बिन्दुओं के अनुसार नियमित कक्षा–अवलोकन तभी कर पाएंगे जबकि उन पर आपकी समझ स्पष्ट होगी। इसलिए इनके उपयोग से पहले दिए गए बिन्दुओं पर अपनी स्पष्ट समझ बना लें।

आशा है कि यह पुस्तिका आपको कार्यक्रम के अन्तर्गत अपनी भूमिका प्रभावी रूप से निभाने में सहायक होगी। आप इसके माध्यम से प्राथमिक कक्षाओं में एक बेहतर नींव बनाने और बेहतर नतीज़ों को सुनिश्चित करने में सफल होंगे। इस पुस्तिका को और अच्छा कैसे बनाया जा सकता है इसके लिए आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित।

3. एसआईक्यूई कार्यक्रम का परिचय

समन्वित कार्यक्रम की पृष्ठभूमि

इस वर्ष राज्य सरकार ने सतत एवं व्यापक आकलन व बाल केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया को समन्वित विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में लागू करने का निर्णय लिया है। अभी तक राजकीय विद्यालयों में प्रमुख जोर बच्चों के नामांकन पर रहा है और नामांकन की मुहिम में गुणवत्ता पर किसी न किसी तरह का समझौता होता रहा है। किन्तु शिक्षा के अधिकार के सार्वजनीकरण के सही में बदलाव के मायने हैं, स्कूलों के बच्चों के शैक्षिक वातावरण व शैक्षिक स्तरों में अपेक्षित बदलाव। बिना इस बदलाव के शिक्षित भारत का सपना पूरा नहीं हो सकेगा। यह महसूस किया जा रहा है कि विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अतः इसके लिए समन्वित विद्यालय की संकल्पना की गई, जिसके अन्तर्गत यह विश्वास किया गया कि उचित वातावरण प्रदान किया जाये तो ***सब बच्चे बेहतर सीख सकते हैं और सभी शिक्षक बेहतर सिखा सकते हैं।***

इन समन्वित विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रा.मा.शि.प., माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, एस. आई.ई.आर.टी. उदयपुर, यूनिसेफ और बोध शिक्षा समिति जयपुर के साथ एक एम ओ यू किया है। इस एम ओ यू के तहत राज्य के सभी समन्वित विद्यालयों में चरणवार कक्षा 1 से 8 में गतिविधि आधारित शिक्षण एवं व्यापक तथा सतत मूल्यांकन का एक समन्वित कार्यक्रम लागू किया जा रहा है।

अकादमिक वर्ष 2015–16 से राज्य के सभी समन्वित विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में यह कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

शैक्षिक सत्र 2010–11 में प्राथमिक शिक्षा विभाग के 60 विद्यालयों में प्रारम्भ किए गए पायलट प्रोजेक्ट से वर्ष 2014–15 तक 22000 विद्यालयों में विस्तार एवं क्रियान्वयन के सकारात्मक परिणाम उभर कर आए हैं। यह समन्वित कार्यक्रम राज्य के इन 22000 प्राथमिक विद्यालयों में क्रियान्वयन के अनुभवों पर आधारित है।

- गतिविधि आधारित शिक्षण एवं व्यापक तथा सतत मूल्यांकन लागू करने से बच्चों के शैक्षिक स्तर में गुणात्मक सुधार नज़र आने लगा है।
- शिक्षकों का कक्षा–कक्ष में गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया अपनाने के प्रति रुझान बढ़ा है।
- शिक्षक बच्चों के शैक्षिक स्तर के अनुरूप शिक्षण–अधिगम योजना बनाने का प्रयास करने लगे हैं।
- कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की शैक्षिक प्रगति को नियमित रूप से दर्ज किया जाने लगा है।

- बच्चों के कक्षा–कार्य एवं प्रयासों का संकलन कर प्रत्येक बच्चे का पोर्टफोलियो संधारित किया जाने लगा है।
- राज्य सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष बच्चों की प्रगति का आकलन नियमित रूप से दर्ज किया जाने लगा है।
- शिक्षक महसूस करने लगे हैं कि वे अब बच्चों के शैक्षिक स्तर के बारे में पहले से अधिक सटीक दृष्टि रख पाते हैं।
- बच्चों की कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान भागीदारी पहले से अधिक बढ़ी है तथा अब बच्चों को पहले से अधिक रिफ्लेक्टिव कार्य करने के अवसर मिलने लगे हैं।

माध्यमिक शिक्षा विभाग में समन्वित कार्यक्रम : गुणवत्ता शिक्षा की ओर ठोस कदम

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यह SIQE कार्यक्रम समन्वित विद्यालयों में क्यों लागू किया जा रहा है? इस प्रश्न पर प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार समझी जा सकती हैं:

- किसी भी गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम के सफल एवं सहज संचालन के लिए आवश्यक है स्थानीय स्तर पर सशक्त नेतृत्व की उपलब्धता। इन विद्यालयों में संस्था प्रधान जैसे वरिष्ठ पद के नेतृत्व की उपलब्धता कार्यक्रम की सफलता की संभावना के प्रतिशत को बढ़ा देती है।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है बेहतर आधारभूत संरचना का होना। समन्वित विद्यालयों में अन्य विद्यालयों से बेहतर आधारभूत सुविधाएँ; जैसे पर्याप्त कक्षा–कक्ष, पर्याप्त मानवीय संसाधन, पर्याप्त विद्यालय संचालन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जिन विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं उन विद्यालयों में आगामी वर्षों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करा दी जाएँगी।
- समन्वित विद्यालय की स्थापना के मूल में यह उद्देश्य निहित है कि ये विद्यालय आस–पास के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को शैक्षिक नेतृत्व एवं संबलन देने वाले विद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हों। कोई भी समन्वित विद्यालय अन्य विद्यालयों को शैक्षिक नेतृत्व एवं संबलन देने का कार्य तब ही कर सकता है जब कि वहाँ के बच्चों का शैक्षिक स्तर तथा कक्षा–कक्ष की सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएँ गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ तथा अपेक्षित स्तर के अुनरूप हों।
- समन्वित विद्यालय में उच्च कक्षाओं में विषयवार शिक्षकों की उपलब्धता की संभावना अन्य विद्यालयों की तुलना में अधिक है, इससे प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों को विद्यालय में ही संबलन एवं सहयोग मिलने की संभावना एवं अवसर बढ़ जाते हैं।
- इन विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं में समन्वित कार्यक्रम लागू करने से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के शैक्षिक स्तर में तुलनात्मक रूप से वृद्धि होगी एवं माध्यमिक

कक्षाओं में आने वाले बच्चे अपेक्षित शैक्षिक स्तर के होंगे। ऐसी स्थिति में माध्यमिक कक्षाओं में बच्चों की अध्ययन में रुचि बढ़ेगी एवं बच्चों का ठहराव माध्यमिक कक्षाओं में बढ़ेगा।

- समन्वित विद्यालयों में इस कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन से अन्य प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों को भी संबलन मिल पायेगा।
- इस कार्यक्रम के सफल संचालन, मॉनिटरिंग व संबलन के लिए राज्य व जिले पर सशक्त समूह का निर्माण किया जायेगा तथा सतत एवं व्यापक आकलन और बाल केन्द्रित शिक्षण विधा को केन्द्र में रख कर कार्यशालाओं का आयोजन किया जायेगा, जिससे कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में बदलाव आ सकेगा।

आशा है आपको यह स्पष्ट हुआ होगा कि गुणवत्ता की दृष्टि से इन विद्यालयों में समन्वित कार्यक्रम को लागू किया जाना कितना आवश्यक है। यह कार्यक्रम शिक्षा में बदलाव के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक आकलन – एक समन्वित कार्यक्रम

बाल केन्द्रित (गतिविधि आधारित शिक्षण) पद्धति और सतत एवं व्यापक आकलन इस कार्यक्रम के प्रमुख आधार हैं। ये दोनों पक्ष आपसी रूप से परस्पर जुड़े हुए भी हैं और एक–दूसरे के बिना पूर्ण रूप से साकार भी नहीं किये जा सकते हैं। अगर इसे सरलतम रूप में देखें तो हर बच्चे को जाने बिना उसकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण कार्य कराना संभव नहीं होगा। ये बालकेन्द्रित शिक्षण मूल का आधार है। अगर ये पक्ष नहीं हों तो हम स्कूलों में अन्य कितने भी परिवर्तन कर लें सही मायने में कक्षा–कक्षों को बाल केन्द्रित नहीं बना सकेंगे। इसी समग्रता को ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्रम में इनके आपसी संबंधित पक्षों को देखना अनिवार्य होगा।

गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सीखने–सिखाने की ऐसी समन्वित प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर, गति एवं रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण एवं आकलन का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में प्रवेश से पूर्व शिक्षण–अधिगम की सतत एवं व्यापक कार्य योजना बना लेते हैं तथा उसी के आधार पर विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति का सतत एवं व्यापक आकलन करते हैं। इस समन्वित प्रक्रिया की मूल मान्यताएँ हैं –

- सभी बच्चे सीख सकते हैं– सामान्य स्तर का बालक अपनी आयु के अनुसार सभी बातों को सीख सकता है, यदि कोई मानसिक बीमारी न हो।
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चे के अनुसार परिवर्तन लाने की आवश्यकता है, तभी

वांछनीय परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इसके लिए हमें हमारे सिखाने के तरीकों के प्रति सजग रहने की जरूरत है।

- हमारे सिखाने के तरीकों में और आकलन में सीधा जुड़ाव गुणवत्ता की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। यहाँ यह स्पष्ट है कि ***सतत रूप से आकलन करते हुए, हर बच्चे का ध्यान रखते हुए शिक्षण किया जाए और आकलन के आधार व आवश्यकता के अनुसार उसमें बदलाव करते हुए आगे बढ़ा जाए।***

समन्वित कार्यक्रम के उद्देश्य

गतिविधि आधारित शिक्षण तथा व्यापक एवं सतत मूल्यांकन प्रक्रिया के स्वरूप एवं इसके मूल में कुछ मान्यताओं व कक्षा 1–5 तक के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए समन्वित उच्च माध्यमिक/माध्यमिक विद्यालयों में गुणात्मक बदलाव के लिए शैक्षिक सत्र 2015–16 से सघन कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके लिए रा.मा.शि.प., यूनिसेफ, बोध शिक्षा समिति, एसआईआरटी, उदयपुर एवं निदेशालय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के मध्य "State Initiative for Quality Education" के नाम से अप्रेल 2015 में एक एमओयू हुआ है। यह कार्यक्रम कुछ स्पष्ट उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ेगा। ये उद्देश्य निम्न हैं –

- .राज्य के सभी समन्वित विद्यालयों (कक्षा 1 से 10 एवं 1 से 12) में आरंभिक स्तर से ही विद्यार्थी के समग्र विकास हेतु बाल केन्द्रित शिक्षण विधा (सी.सी.पी) तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) की समन्वित एप्रोच द्वारा सीखने के स्तर/उपलब्धि स्तर में सतत सुधार करते हुए शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित करना।
- सभी बच्चों का नामांकन और ठहराव सुनिश्चित करना–समन्वित विद्यालय के कैचमेन्ट एरिया में स्थित सभी बच्चों का नामांकन हो, हर नामांकित बच्चे के लिए विद्यालय की उच्चतम कक्षा तक की शिक्षा सुनिश्चित करना।
- राज्य के समन्वित विद्यालयों के संस्था प्रधानों, शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता एवं शैक्षणिक क्षमता को सुदृढ़ करते हुए समन्वित शैक्षिक विकास को सुनिश्चित करना।
- जिले के अन्य विद्यालयों के समर्थन एवं सम्बलन हेतु इन समन्वित विद्यालयों को ''संदर्भ विद्यालय'' (Resource School) के रूप में प्रभावी रूप से विकसित करना।
- प्रत्येक समन्वित विद्यालय में सशक्त नेतृत्व क्षमता को उभार कर ''सेन्टर ऑफ एक्सिलेन्स'' की स्थापना करना।

4. बालकेन्द्रित शिक्षण विधा (सीसीपी)

बालकेन्द्रित शिक्षण से क्या अभिप्राय

मनोवैज्ञानिकों की राय है कि बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं व समाज के साथ हो रही अन्तःक्रिया व गतिविधियों के फलस्वरूप स्वयं हेतु ज्ञान निर्माण करते हैं। बच्चे अपने आस–पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। वे खोज–बीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं व अर्थ गढ़ते हैं। बचपन, विकास व निरंतर बदलाव की अवस्था है जिसमें शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास शामिल है। बच्चे लगातार समाज से अनौपचारिक शिक्षा लेते रहते हैं व स्वयं ज्ञान के सृजन की प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। संस्था के रूप में विद्यालय भी विद्यार्थियों को स्वयं के बारे में सीखने और समाज के बारे में जानने के नए अवसर प्रदान करता है ताकि वे संस्कृति एवं विरासत के साथ जुड़ पाएँ (चाहे उन्होंने किसी भी परिवार या समुदाय में जन्म लिया हो।) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 ने सार्थक अनुभव देने तथा समाहित करने वाली शिक्षा प्रदान करने पर ज़ोर दिया। इसमें बाल–केन्दित शिक्षा को सिखाने के मुख्य तरीके के रूप में देखा गया है। बाल–केन्द्रित पद्धति का अर्थ है कि बच्चों के अनुभवों, उनके मतों, विचारों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना। इस प्रकार की शिक्षा पद्धति में बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास व अभिरुचियों के मद्देनज़र शिक्षा को नियोजित करने की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को विद्यार्थियों की सक्रियता व रचनात्मक सामर्थ्य को पोषित और संवर्द्धित करना चाहिए, उनकी दुनिया से, वास्तविक तरीकों से अन्तर्सम्बंध स्थापित करने, दूसरों से जुड़ने की मूल अभिरुचि या अर्थ ढूँढने की जन्मजात रुचि, को पोषित करना चाहिए।

विद्यार्थियों को संदर्भ में रखना

अब तक यह देखा गया है कि बच्चों की आवाज़ व अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती। प्रायः केवल शिक्षक बोलते हैं व बच्चे प्रश्नों के उत्तर देते या दोहरान करते पाए जाते हैं। बच्चे शायद ही कुछ खुद करके देख पाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी कम मिलते हैं। अब यह उद्देश्य माना जा रहा है कि बच्चे इतने सक्षम बनें कि वे स्वयं की आवाज़ ढूँढें, अपनी उत्सुकता का पोषण कर सकें, स्वयं करें, सवाल पूछें, जाँचें–परखें और अपने अनुभवों को स्कूल के ज्ञान के साथ जोड़कर देख सकें। इस हेतु ही पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों, पढ़ाने के तरीकों, पाठ्यपुस्तकों, शैक्षणिक सामग्री व योजना तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में बदलाव लाया गया है। बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। सीखने का आनंद व संतोष के साथ रिश्ता होने की बजाय यदि भय, अनुशासन व तनाव से सम्बंध हो तो यह सीखने के लिए अहितकारी होता है। आज यह आवश्यक है कि सभी बच्चे यह महसूस करें कि उनका घर, उनका समुदाय, उनकी भाषा व संस्कृति महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हें बच्चे

कक्षा में विश्लेषित कर सकें, जाँच सकें व इनकी सहायता से ज्ञान का सृजन करें। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि हर शिक्षक यह माने कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है, सभी बच्चों को सीखने में मदद करना हमारा दायित्व है। अग्रांकित बिन्दु बाल केन्द्रित कक्षा के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं–

सीखने–सिखाने के तरीके

बालकेन्द्रित कक्षाओं में बच्चों के कर के सीखने व मिल कर सीखने पर बल होता है। बच्चे अनुभव से सीखते हैं। सीखना जीवन्त प्रक्रिया के रूप में शिक्षक के मार्गदर्शन एवं मदद से होता है। शिक्षण योजना बच्चों की रुचियों को ध्यान में रख कर बनाई जाती है।

इनमें बच्चों की कार्य में संलग्नता बहुत अधिक होती है व बच्चे स्वयं के सीखने में सक्रिय भूमिका निभा रहे होते हैं। यहाँ कक्षाएँ एवं विद्यालय सीखने के लिए उपयुक्त व समग्र होता है, जिसमें बच्चों की अभिरुचियों को सीखने–सिखाने व पूरे कार्य के मध्य में रखा जाता है।

बच्चों को प्रश्न पूछने, अपने सीखने पर चितंन करने, सहपाठियों से चर्चा करने, सीखे हुए को वास्तविक जीवन में प्रयोग करने व नए अनुभव लेने हेतु भरपूर अवसर मिलते हैं।

शिक्षक–विद्यार्थी के बीच अन्तर्सम्बंध

बालकेन्द्रित शिक्षण विधा से कार्य करने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में पर्याप्त समझ रखते हों।

इसमें शिक्षक बच्चों के सीखने के लिए ऐसे अवसर निर्मित करते हैं जिससे वे नए अनुभव व अवधारणाओं को अपने पहले के अनुभवों व ज्ञान से जोड़ कर देख पाएं, नया जानने के बारे जिज्ञासु रहें व शिक्षक के साथ मिलकर नया सीखें व प्रश्नों के उत्तर खोजें। बच्चों के पास अपनी कक्षा के सम्बंध में निर्णय लेने की आज़ादी हो व अपनी कक्षा के प्रबन्धन में शिक्षक सहित एक अहम भूमिका अदा करें। शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य प्यार, सम्मान व मिलकर सीखने वाले साथियों की तरह का सम्बन्ध हो।

साथ मिलकर सीखना

वे शिक्षक जो भाषण या सिर्फ श्यामपट्ट/पाठ्यपुस्तक से पढ़ाने की विधा का प्रयोग करते हैं, भूल जाते हैं कि सीखना एक सामाजिक वातावरण में घटने वाली प्रक्रिया है। अतः बच्चों को मिलकर सीखने के अवसर देना अति महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक सभी पाठों या उद्देश्यों के लिए

समूहों में सीखने के अवसर देने हेतु दैनिक योजना निर्माण करते हैं। इससे बच्चे ऐसी दक्षताओं को विकसित करते हैं जो जीवन पर्यन्त उनकी सहायता करती है।

वस्तुनिष्ठ आकलन

बाल केन्द्रित शिक्षण का एक मुख्य अंग सतत व व्यापक आकलन प्रक्रिया है। इसमें आकलन को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में माना गया है व आकलन का प्रयोग बच्चों की आवश्यकताओं को जानने व उसके अनुरूप मदद सुनिश्चित करने को माना गया है। वस्तुनिष्ठता हेतु अलग–अलग उपकरणों का प्रयोग व बच्चों द्वारा स्वयं का आकलन कर शिक्षक को फीडबैक देने जैसे पक्ष भी सम्मिलित हैं। इसमें आकलन शिक्षक व बच्चों, दोनों के लिए फीडबैक के रूप में है।

शिक्षक की तैयारी

बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों को प्रयोग में लेने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक पूर्व तैयारी, सामग्री व योजना सहित कक्षा में प्रवेश करें। योजना का यह पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षक किए गए कार्य की समीक्षा व आकलन करते हुए हर बच्चे हेतु उपयुक्त शिक्षण योजना बनाने का प्रयास करें व उसे क्रियान्वित करें।

बच्चों की सक्रियता सुनिश्चित करते हुए उनसे फीडबैक लेना

यह सुनिश्चित करने हेतु कि कक्षा में करवाया जा रहा कार्य बच्चों के लिए रुचि का है व उन्हें संलग्न करता है, समय–समय पर बच्चों से फीडबैक लेना व सुधार हेतु सुझाव लेना महत्त्वपूर्ण है।

संज्ञान

संज्ञान का अर्थ है कर्म व भाषा के माध्यम से स्वयं व दुनिया को समझना। सार्थक अधिगम से अभिप्राय है ठोस चीजों व मानसिक द्योतकों को प्रस्तुत करने व उनमें बदलाव लाने की उत्पादक प्रक्रिया, न कि जानकारी इकट्ठा कर उसे रटना। अतः भाषा व विचार का प्रगाढ़ सम्बंध है। बच्चे शुरुआत में 'यहाँ व अभी' के बारे में जानने में इच्छुक होते हैं तथा ठोस अनुभवों पर तर्क और कार्य करते हैं। जैसे–जैसे उनकी भाषायी क्षमता और दूसरों के साथ काम करने की सामर्थ्य बढ़ती है उनके कार्यों में जटिल विवेचना की सम्भावनाएँ खुलती जाती हैं जिनमें अमूर्तीकरण, नियोजन व वे उद्देश्य समाहित होते हैं जो तत्काल दिखाई नहीं देते।

अतः काल्पनिक विचारों के साथ काम करने व सम्भावनाओं की दुनिया में विवेचना की क्षमता बढ़ती जाती है। बच्चों के सीखने के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु :–

1. सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित होते हैं व उनमें सीखने की क्षमता होती है।
2. अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना व कार्य, अधिगम की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।
3. बच्चे व्यक्तिगत स्तर पर एवं दूसरों से भिन्न तरीकों से यथा अनुभव के माध्यम से स्वयं चीज़ें करने, बनाने, प्रयोग करने, पढ़ने, विमर्श करने, पूछने, सुनने उस पर मनन करने तथा गतिविधि या लेखन के ज़रिए अभिव्यक्त करने से सीखते हैं।
4. यह आवश्यक है कि बच्चे सिर्फ रटें नहीं बल्कि अर्जित किए हुए ज्ञान को अपने जीवन व आस–पास के वातावरण से जोड़ कर देखें।
5. यदि बच्चों के औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से अर्जित ज्ञान के बीच सम्बंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है।
6. सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी समझते हुए आत्मसात कर सके। यदि सीखने में विविधता व चुनौती होगी तो बच्चे उसमें रुचि लेंगे व व्यस्त रहेंगे।
7. ऊब महसूस होना इस बात का संकेत है कि वह कार्य अब यांत्रिक रूप से किया जा रहा है और उसका संज्ञानात्मक मूल्य खत्म हो गया है।
8. सीखने में विद्यालय, समुदाय व परिवार के सदस्यों के साथ संवाद व अन्तःक्रिया बहुत महत्त्वपूर्ण है।

पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद–विवाद, व्यवहारिक प्रयोग व ऐसा चिंतन जिससे सिद्धांत बन सकें और विचार/स्थितियों की रचना हो सके, ये सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं। स्कूलों द्वारा ऐसा अवसर प्रदान करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

हम शिक्षक होते हुए कई बार यह प्रयास करते हैं कि सभी बच्चे एक प्रश्न के समान उत्तर दें पाएँ। अन्य उत्तरों को हम अलग–अलग कारणों से स्वीकार नहीं कर पाते। साथ में यह भी सोचने की आवश्यकता है कि बच्चे हमेशा उत्तर ही क्यों दें, क्या वे दिए गए उत्तरों से प्रश्न भी बना सकते हैं?

अंतःक्रिया का मूल्य

सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है आस–पास के वातावरण, प्रकृति, चीज़ों व लोगों से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अंतःक्रिया करना। इधर–उधर घूमना, खोजना, अकेले काम करना,

भाषा को पढ़ना, अभिव्यक्त करना, पूछने और सुनने के लिए प्रयोग करना, ये कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण क्रियाएँ हैं जिससे सीखना संभव होता है।

शैक्षिक अनुभवों की रूपरेखा बनाना

अच्छे शैक्षिक कार्य से गुणवत्तापूर्ण अधिगम होता है। यह बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण है। वे अभ्यास जो बहुत सरल हैं, या बहुत कठिन, जो बार–बार एक ही बात यांत्रिक रूप से दोहराते हैं, जो पाठ्यपुस्तक को याद करने पर आधारित होते हैं, जो बच्चों को आत्माभिव्यक्ति व प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं देते, शिक्षक के जाँच कार्य पर ही निर्भर रहते हैं, वे बच्चों को आज्ञापालन करने वाली निष्क्रिय कठपुतली बना देते हैं। इससे बच्चे स्वयं के विचारों व विवेक को महत्त्व देना नहीं सीखते। वे ये सीखते हैं कि ज्ञान दूसरों द्वारा बनाया जाता है और उन्हें सिर्फ उसे ग्रहण करना चाहिए। अतः यह शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि उन तरीकों का प्रयोग करें जिससे बच्चे सीखने हेतु प्रोत्साहित हों। कई बार बच्चे शिक्षकों द्वारा नियंत्रित होना सीख लेते हैं और यह चाहने लगते हैं कि उन्हें नियंत्रण में रहना आए। यह संज्ञानात्मक विकास के लिए हानिकारक है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक–समूह व बच्चे मिलकर स्वअनुशासन की ओर बढ़ें जिसमें चुप रहना, सिर्फ सुनना या सिर्फ शिक्षक के आदेशों का पालन करना ना होकर ऐसे वातावरण का निर्माण करना हो जिसमें सभी बच्चे मिलकर ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न हो सकें।

प्रक्रिया के रूप में यह भी स्थापित करना आवश्यक है कि बच्चे पाठ्यपुस्तकों व अध्यापक के अलावा अन्य स्रोतों से भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित हों। बच्चे खुद खोज करके एवं प्रमाण जुटा कर सीखते हैं और ज्ञान का सृजन करते हैं। बच्चे स्वयं के अनुभवों से, घर एवं समुदाय के सदस्यों के अनुभवों, पुस्तकालयों और स्कूल के बाहर अन्य स्रोतों से ज्ञान तलाश सकते हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षण

कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया काफ़ी हद तक विद्यालय, परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है। एक सुरक्षित चिंतामुक्त, सुविधाजनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने और कुछ अधिक हासिल करने में मदद करता है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने को खेल विधियों और बाल केंद्रित पद्धतियों द्वारा उन्नत किया जा सकता है। आजकल 'बाल केंद्रित' शब्दावली बहुत अधिक प्रचलन में है, इससे क्या अभिप्राय है ? हम दो कक्षाओं पर नज़र डालते हैं, एक शिक्षक केंद्रित है और दूसरी बाल केंद्रित है, दोनों की गतिविधियों पर नज़र डालने से 'बाल केंद्रित' के अर्थ स्पष्ट होंगे। तस्वीर आगे दी गई है।

दो कक्षाओं की तस्वीर



शिक्षक केंद्रित कक्षा

- शिक्षक निर्देश देते हैं और बच्चों से आज्ञापालन व अनुशासन की अपेक्षा करते हैं।
- शिक्षक के पढ़ाने के दौरान बच्चे सुनते हैं।
- शिक्षक पाठ्यपुस्तक पढ़ते हैं, श्यामपट्ट पर प्रश्न और उत्तर लिखते हैं। कभी–कभी एक बच्ची ज़ोर–ज़ोर से पढ़ती है, बाकी सुनते हैं।
- बच्चे पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों या शिक्षक द्वारा बताए गए तथ्यों को याद करते हैं।
- कक्षा में शिक्षक का नियंत्रण रहता है, बच्चों की भागीदारी बहुत कम होती है।
- बच्चे आमतौर पर अकेले (स्वयं) ही सीखते हैं।
- समय सारणी में लचीलेपन का अभाव होता है।
- बैठने की व्यवस्था भी पहले से ही तय होती है।
- सामग्री केवल प्रदर्शन के लिए होती है।
- बच्चों में अधिकांश समय उकताहट और अरुचि का भाव रहता है।



बाल केंद्रित कक्षा

शिक्षक सीखने के
अवसर प्रदान करते हैं और
सीखने को दिशा देते हैं,

किसी भी व्यक्ति के बाहर
से आने पर बच्चों के लिए
व्यवधान उपस्थित नहीं होता,
चूँकि बच्चे काम में संलग्न रहते हैं
अतः अध्यापिका ही बाहर आ जाती है।

बच्चे तरह–तरह की
गतिविधियों और कार्यकलापों में
क्रियाशील होकर जुड़े रहते हैं,

समय सारणी में
लचीलापन होता है और
बच्चे क्या करना चाहते हैं,
उन पर निर्भर करता है,



तरह–तरह की
सामग्री, उपकरण
कक्षा में
उपलब्ध रहते हैं
और बच्चे
इनका
इस्तेमाल करते हैं,

गतिविधि के अनुसार
बैठने की व्यवस्था में
परिवर्तन होता रहता है,

बच्चे
व्यक्तिगत रूप से भी
कार्य करते हैं और
समूह में भी। वे
चर्चा करते हैं,
अनुभव बाँटते हैं,
सहयोग करते हैं और
एक–दूसरे के विचारों
का आदर करते हैं,



शिक्षक बच्चों के लिए ऐसी सीखने की
स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जहाँ बच्चों को अवलोकन करने,
खोजबीन करने, प्रश्न करने, अनुभव लेने और
विभिन्न अवधारणाओं के प्रति अपनी समझ
बनाने के अवसर मिलते हैं,

बच्चे स्वयं ही ज्ञान का
निर्माण करते हैं जो उनके
विद्यालय के बाहर प्राप्त
अनुभवों पर आधारित होता है









5. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई)

1. प्रस्तावना :

हम सभी बच्चों के बारे में चिंतित हैं और इसीलिए हम सबका सरोकार इस बात से है कि हर स्कूल एक ऐसी जगह बने जहाँ हर बच्चे को सीखने के मौके मिलें। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोग, विशेषकर शिक्षक इस संबंध में अपने आपको बहुत ही जिम्मेदार मानते हैं। ऐसा उनकी इच्छाओं से जाहिर होता है कि वे सभी बच्चों को उनके गुण और रुचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर हैं। वे उन्हें विश्वास के साथ अपनी ज़िंदगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते हैं। शिक्षकों का काफ़ी समय तो इसी बात का पता लगाने में निकल जाता है कि बच्चे स्कूल में कैसा कर पा रहे हैं। बहुत से शिक्षक आकलन को अपने स्कूल की रोज़मर्रा की महत्त्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते हैं। शिक्षक विद्यालय में दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते हैं, बच्चों का आकलन उनका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, ऐसा क्यों है ?

शिक्षक इसके लिए बहुत से कारण बताते हैं– एक महत्त्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं ? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। जो भी हो तीसरी वजह, जिसको सिर्फ़ शिक्षक ही नहीं बल्कि हम सभी बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वह यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न–भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या उपलब्धियाँ रहीं। ऐसा शायद इसलिए कि हम बच्चों को बेहतर शिक्षा देना चाहते हैं और महसूस करते हैं कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब टैस्ट और परीक्षाओं के ज़रिए पढ़ाए गए विषयों में बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाए। परीक्षणों (टैस्टों) का अपना एक उद्देश्य है पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करना चाहते हैं तो हमें यह बात खास तौर से समझने की ज़रूरत है कि टैस्ट/परीक्षाओं में बच्चे द्वारा प्राप्त किए गए अंक और ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते हैं।

2. बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए ?

- भिन्न–भिन्न विषयों में समय की एक अवधि विशेष में बच्चे की प्रगति और उसमें आने वाले परिवर्तनों का पता लगाना।
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष ज़रूरतों को पहचानना।
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अध्यापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना।
- कोई भी बच्चे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं, उनकी किन चीज़ों में विशेष रुचि है, वह क्या करना चाहते हैं और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाने और महसूस करने में बच्चों की मदद करना।
- बच्चों को कुछ अर्जित करने एवं पूर्णता की भावना के विकास के लिए प्रोत्साहित करना।
- कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।

- बच्चे के प्रगति के प्रमाण तय कर पाना जिन्हें अभिभावकों और दूसरों तक संप्रेषित किया जा सके।
- बच्चों के आकलन के प्रति व्याप्त भय को दूर करना और उन्हें स्व–आकलन के लिए प्रोत्साहित करना।
- प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास में मदद करना और सुधार की संभावनाएँ खोजना।

3. आकलन कब किया जाना चाहिए?

- **दिन–प्रतिदन के आधार पर**– बच्चों के साथ सतत रूप से अन्तःक्रिया करना, कक्षा के बाहर व भीतर उनकी गतिविधियों का अवलोकन करना।
- **सावधिक** – हर दूसरे महीने में एक बार शिक्षक बच्चों के कामों की जाँच करें और एकत्र की गई सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपनी राय बताएं। यह किसी प्रकार की परीक्षा के रूप में नहीं होना चाहिए।

4. आकलन कैसे किया जाए?

भिन्न–भिन्न स्रोतों और विधियों द्वारा सूचना और प्रमाण जुटाना *:*

सूचनाओं के स्रोत *:*

- माता–पिता/अभिभावक
- अन्य शिक्षक
- बच्चों के मित्र/सहपाठी
- समुदाय के लोग

5. आकलन के तरीके

किसी भी तरीके को चुनने से पहले प्राप्त की जाने वाली ज़रूरी सूचनाओं के लिए आकलन के प्रकार का निर्धारण आवश्यक है। आकलन करने के चार मूलभूत तरीके हैं–

- **व्यक्तिगत आकलन** – एक बच्चे को केन्द्र में रखते हुए किया गया आकलन जब वह कोई गतिविधि/कार्य करता है और उसे पूर्ण करता है।
- **सामूहिक आकलन** – किसी कार्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से बच्चों द्वारा, सामूहिक रूप से कार्य करते समय सीखने और प्रगति का आकलन सामूहिक आकलन है। आकलन का यह तरीका बच्चों के सामूहिक कौशलों, सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया तथा बच्चों के व्यवहार से संबंधित अन्य मूल्यों के आकलन के लिए बहुत उपयुक्त पाया गया है।
- **स्व–आकलन** – बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने तथा ज्ञान, कौशल, प्रक्रियाओं, रुचि, व्यवहार आदि में प्रगति के स्व–आकलन से संबंधित है।
- **सहपाठियों द्वारा आकलन** – एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चे का आकलन, इसे दो बच्चों की जोड़ी या समूह में करवाया जा सकता है।

सीखने और आँकने

समूह, व्यक्तिगत या फिर जोड़ी में कार्य

आकलन के तरीके

सामग्री

किस तरह की गतिविधि

प्रक्रियाएँ



शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और आकलन की योजना एवं संगठन

पुनर्विचार/प्रतिबिम्बात्मक प्रक्रिया



बच्चों के सीखने से जुड़ी बातों और प्रगति को रिपोर्ट करना और पृष्ठपोषण संप्रेषित करना



प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।
सीखने की कोई सीमा नहीं है।

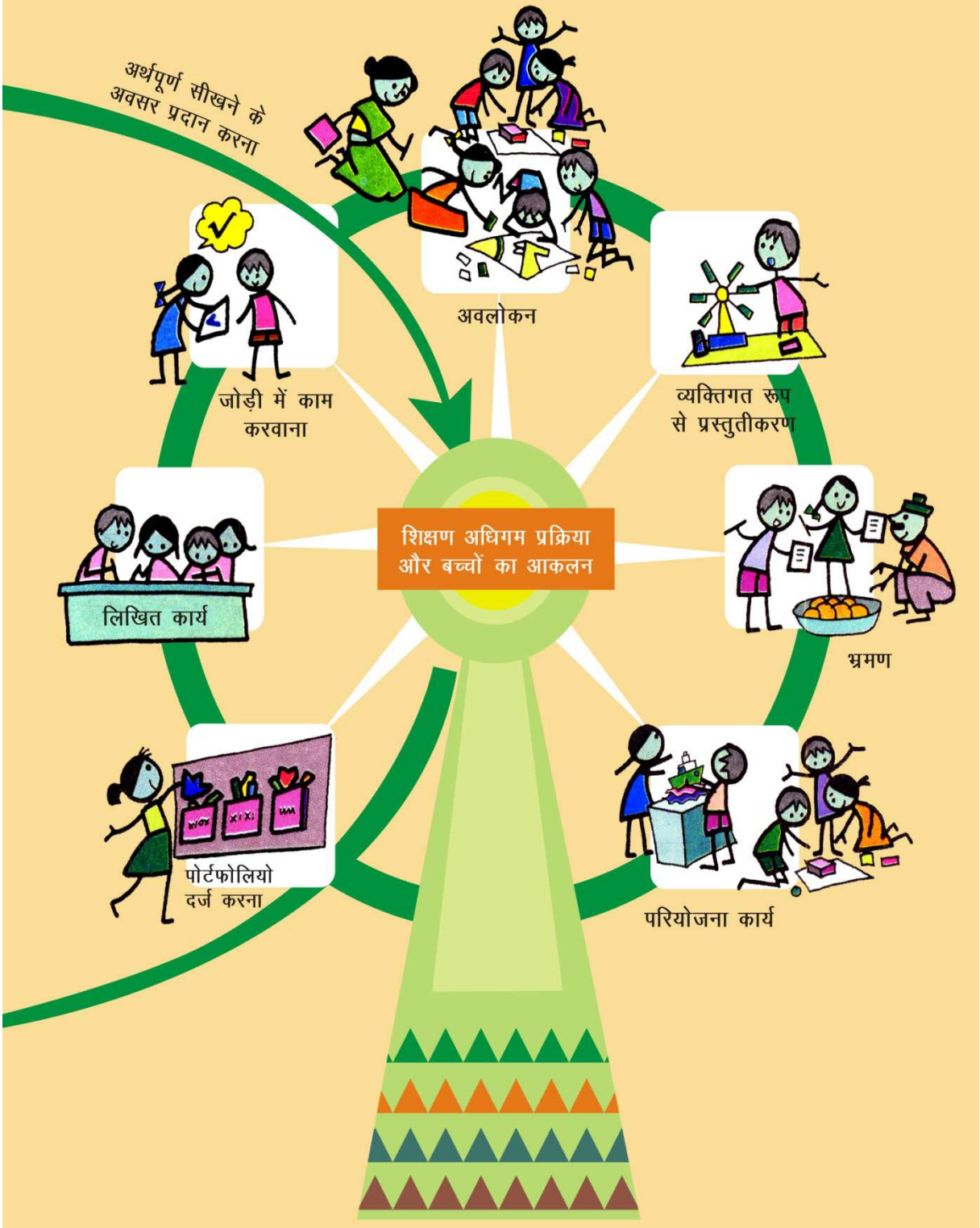


सुनिश्चित करना कि पृष्ठपोषण किसे और कैसे दिया जाए



सूचनाएँ दर्ज करना और प्रगति रिपोर्ट तैयार करना

(आकलन) का चक्र


अर्थपूर्ण सीखने के अवसर प्रदान करना
अवलोकन
व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुतीकरण
भ्रमण
परियोजना कार्य
पोर्टफोलियो दर्ज करना
लिखित कार्य
जोड़ी में काम करवाना
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और बच्चों का आकलन

6. आकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है :

- यह समझने में कि बच्चे किस तरह और कितना सीख पा रहे हैं।
- स्वयं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने में।
- प्रत्येक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को समुन्नत करने के उद्देश्य से उन्हें और अधिक अर्थपूर्ण अवसर तथा अनुभव प्रदान करने की दिशा में।

7. राजस्थान के संदर्भ में सतत एवं व्यापक आकलन प्रक्रिया :

''शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009'' एवं ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005'' हमारे समक्ष भारत में शिक्षा की समग्र तस्वीर रखते हैं।

जो रूपरेखा हमारे समक्ष उभर कर आती है वह सीखने के लिए स्वस्थ वातावरण निर्माण, कक्षा–कक्ष प्रक्रिया और परिणामों में वास्तविक बदलाव की मांग करती है। ''आरटीई एक्ट–2009'' और ''एनसीएफ–2005'' दोनों ही इस संदर्भ में आकलन प्रक्रिया के महत्त्व को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। एनसीएफ–2005 के अनुसार आकलन प्रक्रिया हमारी शिक्षा प्रणाली में निहित है। उसमें परिवर्तन के बिना पाठ्यक्रम का नवनिर्माण करने के सभी प्रयास औचित्य विहीन हो जाते हैं।

अतः आकलन को इस भूमिका में देखा जा रहा है कि वह सभी नवीनीकरण की प्रक्रियाओं को धुरी प्रदान करता है, प्राथमिकताओं को तय करता है और जवाबदेही की मांग का भी निर्माण करता है। इसी भावना एवं दृष्टिकोण के साथ सीसीई नवीन आकलन एवं कक्षा–कक्षीय परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में एक सार्थक विकल्प हो सकता है।

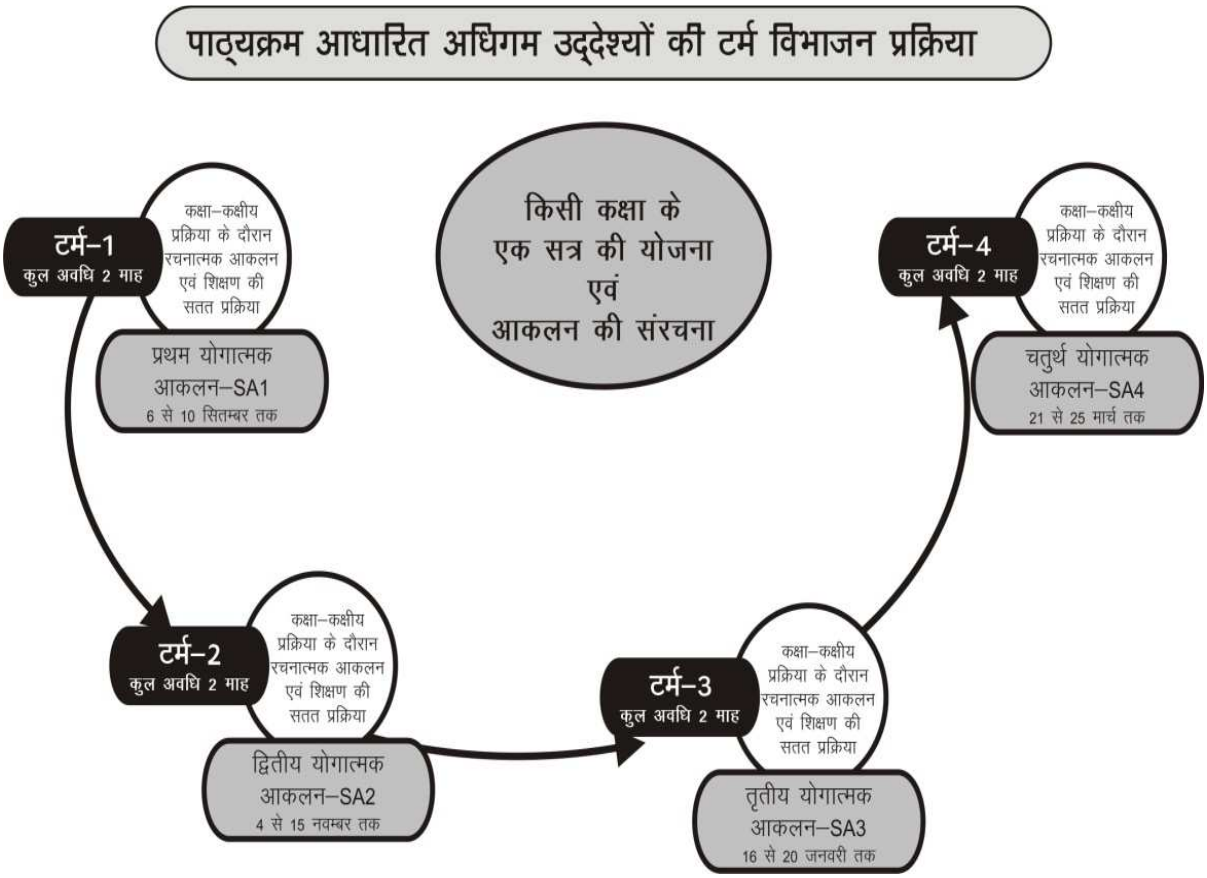
राजस्थान में सीसीई विस्तार

	Year	No. of School
As a Pilot	2010-11 & 12	60
Phase – I	2012 – 2013	3059
Phase – II	2013 – 2014	2742
Phase – III	2014 – 2015	15605
Phase – IV	2015 – 2016	19703
Total		**41169**

6. राजस्थान सीसीई स्कीम विवरण

राजस्थान में संचालित सीसीई स्कीम के अंतर्गत निम्नलिखित प्रक्रियाएँ एवं दस्तावेज़ सम्मिलित हैं–

पाठ्यक्रम का टर्मवार विभाजन



आधार रेखा आकलन

क्या : सत्र के प्रारंभ में बच्चों के शैक्षिक स्तर को जानने के लिए किया जाने वाला परीक्षण 'आधार रेखा आकलन' कहलाता है।

आवश्यकता क्यों : आधार रेखा आकलन (कक्षा 2 से प्रारंभ करते हुए) किसी भी कक्षा में अध्ययनरत बच्चों के वास्तविक शैक्षिक स्तर को जानने के लिए आवश्यक है, जिससे कि बच्चों को उनके शैक्षिक स्तर के आधार पर उचित योजना बनाकर कार्य करवाया जा सके। जिन विद्यालयों में पूर्व से ही सीसीई संचालित है, वहाँ बच्चों के अन्तिम योगात्मक आकलन को आधार माना जाता है। फिर भी बच्चों के प्लेसमेंट के लिए आधाररेखा आकलन किया जा सकता है। इन विद्यालयों में कक्षा 1 को छोड़कर अन्य कक्षाओं में नवीन प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का आधार रेखा आकलन लेना आवश्यक है। लेकिन जिन विद्यालयों में पहली बार सीसीई संचालित किया जाना है, वहाँ पर कक्षा 2 से 5वीं तक की सभी कक्षाओं के बच्चों का आधार रेखा आकलन उनके शैक्षिक स्तर की जाँच करने के लिए आवश्यक है।

कैसे : आधार रेखा आकलन हेतु सत्र के प्रारंभ में 15–20 दिन बच्चों के साथ पूर्व की कक्षा के कार्यों का दोहरान करा लेने के पश्चात एक आधार रेखा आकलन पत्रक (टूल) द्वारा बच्चों का आकलन किया जाएगा। इस पत्रक/टूल में मौजूदा स्तर से पूर्व की 1 से 4 कक्षाओं के स्तर की मुख्य क्षमताओं पर आधारित प्रश्न होने चाहिए। आधार रेखा आकलन/प्लेसमेंट टूल के नमूने स्रोत पुस्तिका में विषयवार अनुलग्नकों में दिए गए हैं।

पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य (1 से 5)

क्या : यह एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसके अन्तर्गत विषय से सम्बन्धित उद्देश्य, कक्षावार पाठ्यक्रम, टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण तथा पाठवार एवं टर्मवार अधिगम–कार्य एवं उद्देश्यों को व्यवस्थित किया गया है।

बच्चों के लिए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से पूर्व योजना–निर्धारण एवं तैयारी के लिए पाठ्यपुस्तक के साथ पाठ्यक्रम एवं विषय के मुख्य उद्देश्यों को देखना भी आवश्यक हो जाता है, जिससे कि उनके सापेक्ष योजना को बनाने में मदद मिल सके।

अध्यापक योजना डायरी (रचनात्मक आकलन)

क्या : अध्यापक योजना डायरी एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें प्रत्येक कक्षा से सम्बन्धित विषय के लिए शिक्षण–आकलन कार्य योजना, समीक्षा एवं रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक सत्र के लिए अध्यापक योजना डायरी का प्रावधान रखा गया है।

विषयवार अलग–अलग डायरियाँ रखी गई हैं। प्राथमिक स्तर पर कुल 7 डायरियाँ हैं। जिनका विवरण इस प्रकार से है –

विषय	कक्षा	संख्या	कुल	
हिन्दी	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
गणित	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
अंग्रेजी	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
पर्यावरण अध्ययन	कक्षा : 3 से 5	1	1	**कुल डायरियाँ = 7**

क्यों : सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना एवं तैयारी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षक के पास पूर्व से ही वर्षभर के लिए एक निर्धारित पाठ्यक्रम एवं उसके अनुरूप तैयार की गई पाठ्यपुस्तक उपलब्ध होती है। लेकिन इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु बच्चों के स्तरानुरूप कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया सुगम एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए योजना की आवश्यकता होती है। जिससे बच्चों की सीखने की स्थितियों पर निरंतर ध्यान रखना एवं उनकी आवश्यकता के अनुरूप योजना में बदलाव करते हुए उचित पृष्ठपोषण देना रचनात्मक आकलन के तहत आता है।

शिक्षक आकलन योजना डायरी का प्रारूप

पाठ/अवधारणा/थीम ..... सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण–आकलन योजना	दिनांक .....से .....तक

सम्पूर्ण कक्षा के लिए अधिगम उद्देश्य : .....

.....

सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
.....	.....
.....	.....
समूह–एक के लिए क्षमता संवर्धन हेतु योजना	
.....	.....
.....	.....

II. समूह–2 के लिए आवश्यकतानुसार अतिरिक्त शिक्षण–आकलन योजना

समूह–2 के लिए विशेष अधिगम उद्देश्य : .....

.....

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
.....	.....
.....	.....

शिक्षण योजना की समीक्षा: सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान आई समस्या, समाधान एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में

साप्ताहिक : समयान्तराल ..... से ..... तक	पाक्षिक : समयान्तराल ..... से ..... तक
बच्चों की सहभागिता, सीखने–सिखाने में आई कठिनाई एवं योजना में आवश्यक बदलाव के बारे में :–	बच्चों की सहभागिता, सीखने–सिखाने में आई कठिनाई एवं अधिगम उपलब्धि के बारे में :– ....

सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति (नमूना पत्रक)

प्रथम टर्म : सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

कक्षा : 3

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन सूचक	आवृत्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
आकृति एवं स्थान की समझ																															
चीज़ों के तलों को द्विआयामी आकृतियों की रचना से खोज पाना। (ट्रेस करना)	I																														
	II																														
घन व घनाभाकार चीज़ों का पृष्ठीय विकास कर पाना। (द्विआयाम में खोल कर पृष्ठीय विकास करना)	I																														
	II																														
परिवेशीय चीज़ों को ऊपर से व सामने से देखने पर कैसी दिखेंगी, इसे विजुअलाइज़ कर पाना।	I																														
	II																														
संख्या ज्ञान की समझ																															
1 से 200 तक की संख्याओं को पहचान पाना एवं संख्या रेखा पर निरूपित कर पाना।	I																														
	II																														
स्थानीय मान की समझ के आधार पर तीन अंकों तक की संख्याओं का निरूपण कर पाना, विस्तारित रूप में लिख पाना, संख्या पढ़ पाना और तुलना कर पाना।	I																														
	II																														
संक्रियाओं की समझ																															
दो अंकों तक की संख्याओं का बिना हाँसिल का जोड़ संख्या रेखा पर कर पाना।	I																														
	II																														
दो अंकों तक की संख्याओं का हाँसिल का जोड़ स्थानीयमान की मदद से संख्या रेखा पर कर पाना।	I																														
	II																														

पूर्व कक्षा से संबंधित बुनियादी क्षमताओं के सापेक्ष सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

कक्षा – 1 *संख्या ज्ञान एवं **संक्रियाओं के सूचक	विद्यार्थियों के रोल नम्बर → टर्म																														
*1 से 50 तक संख्या नाम सुनकर और संख्या पढ़कर चीज़ों की मात्रा गिनकर बता पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														
1 से 50 तक संख्या नाम सुनकर एवं चीज़ों को गिनकर संख्या लिख पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														
**दहाई की संख्या में इकाई की संख्या का बिना हाँसिल का जोड़ मौखिक व लिखित हल कर पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														

सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख (योगात्मक आकलन)

प्रत्येक टर्म में विभाजित पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धि के स्तर के आकलन को योगात्मक आकलन कहा गया है। इस अभिलेख को एक रजिस्टर के रूप में तैयार किया गया है। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी से संबंधित चारों टर्मों का विवरण दर्ज किया जाना है। इस प्रकार इस रजिस्टर में लगभग 50 विद्यार्थियों की प्रगति को दर्ज किया जा सकता है।

योगात्मक आकलन (नमूना पत्रक)

सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख

विद्यार्थी क्रमांक

नाम : ..... नामांकित कक्षा :.....
आधार रेखा/पदस्थापन मूल्यांकन से प्राप्त कक्षा स्तर
हिंदी ....., गणित ....., अंग्रेजी .....

2.गणित

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
आकृति एवं स्थान की समझ	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
दिए गए चित्र से छोटा और बड़ा, छोटे से बड़े एवं बड़े से छोटे के क्रम में चित्र बना पाना। ☐ मुक्त हस्त से ☐ नैट पर					
त्रिआयामी चीज़ों का वर्गीकरण कर पाना। ☐ सहज रूप में देखकर ☐ सरका एवं लुढ़काकर ☐ उनके तल, कोने, किनारे गिनकर					
त्रिआयामी व द्विआयामी आकृतियों के सम्बन्ध को समझ पाना। ☐ ट्रेसिंग से ☐ पृष्ठीय विकास से ☐ नैट पर आकृति बनाकर					
आकृतियों को विविध कोणों से विजुअलाइज़ कर पाना। (कक्षा 3 से 5 तक) ☐ छवि चित्र का आकृति से मिलान ☐ छवि चित्र बनाना ☐ नज़री नक्शा बनाना।					
सममिति की समझ बनाना। (कक्षा 3 से 5 तक) ☐ अधूरे चित्र पूरे करना ☐ सममिति अक्ष खोजना (दर्पण द्वारा) ☐ घूर्णन सममिति कोण द्वारा					
कोण बनाने की स्थितियों, उनके प्रकारों, उनकी रचना एवं मापन की समझ बना पाना। (केवल कक्षा 5 के लिए)					
संख्या ज्ञान की समझ	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
संख्या नाम पढ़कर/सुनकर चीज़ों को गिनकर बता पाना। ☐ 1–50 तक ☐ 0–100 तक ☐ 101 से 999 तक					
संख्या नाम सुनकर एवं चीज़ों को गिनकर संख्या लिख पाना। ☐ 1–50 तक ☐ 0–100 तक ☐ 101 से 999 तक					
संख्याओं की तुलना कर पाना। ☐ 1–20 तक ☐ 21–100 तक ☐ 101 से 999 तक ☐ 999 से ऊपर					
चीज़ों व चित्रों को देखकर उनकी मात्रा का अनुमान लगा पाना। ☐ 1–10 तक ☐ 0–50 तक ☐ 0–100 तक ☐ 101 से ऊपर					
विविध प्रकार से संख्याओं का निरूपण कर पाना। ☐ 1 से 20 तक ☐ 21 से 100 तक ☐ 101 से ऊपर					
रंग, आकार व चित्र संकेतीकरण एवं दिए गए अंकों से सर्वसम्भव संख्याएँ बना पाना। ☐ दो अंक ☐ तीन अंक ☐ चार अंक ☐ पाँच अंक					
भिन्न की समझ बना पाना। (कक्षा 3 से 5 के लिए) ☐ आरम्भिक समझ ☐ भिन्नों का ठोस व चित्र से निरुपण ☐ भिन्नों की तुलना ☐ संख्या रेखा पर निरुपण					
गुणज व गुणनखण्ड की आरम्भिक समझ तथा ल.स.प. एवं म.स.प. की समझ बना पाना। (केवल कक्षा–5 के लिए)					
संक्रियाओं की समझ	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
बिना हासिल का जोड़ एवं बिना उधार का घटाना मौखिक व लिखित रूप में हल कर पाना। जोड़ : ☐ एक अंक का ☐ दो अंकों का ☐ तीन अंकों का घटाव : ☐ एक अंक का ☐ दो अंकों का ☐ तीन अंकों का					
हासिल का जोड़–घटाव कलन विधि (कायदा) से कर पाना। जोड़ : ☐ एक अंक का ☐ दो अंकों का ☐ तीन अंकों का घटाव : ☐ एक अंक का ☐ दो अंकों का ☐ तीन अंकों का					
गुणा की समझ बना पाना। (कक्षा 2 से 5 तक) ☐ आरम्भिक समझ ☐ दहाई का इकाई से ☐ दहाई का दहाई से ☐ बंटन विधि से					
भाग की समझ बना पाना। (कक्षा 3 से 5 तक) ☐ आरम्भिक समझ ☐ दहाई में इकाई का ☐ सैंकड़े में इकाई का ☐ सैंकड़े में दहाई का					
पहाड़े बनाना एवं याद करना। ☐ 2 से 5 तक ☐ 2 से 10 तक ☐ 10 से ऊपर					
इबारत पढ़कर/सुनकर संक्रिया को हल कर पाना। एक चरण वाली : ☐ जोड़ ☐ घटाव ☐ गुणा ☐ भाग दो चरण वाली : ☐ जोड़–घटा ☐ जोड़–गुणा ☐ गुणा–बाकी					
संक्रिया हल हेतु संख्या रेखा का अनुप्रयोग कर पाना। ☐ जोड़ ☐ घटाव ☐ गुणा ☐ भाग					

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
मापन की समझ	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
चीज़ों की कीमत का अनुमान लगा पाना एवं लेन–देन कर पाना। ☐ 10 रु. तक ☐ 50 रु. तक ☐ 100 रु. तक ☐ 100 रु.से ऊपर					
दो घटी घटनाओं एवं तिथियों के बीच के समय की गणना कर पाना। ☐ कम व ज़्यादा देर के सन्दर्भ में ☐ मानक इकाइयों से					
चीज़ों की मात्रा का विविध भौतिक राशियों के संदर्भ में अनुमान लगा पाना। ☐ अमानक इकाइयों से ☐ मानक इकाइयों से					
विविध भौतिक राशियों का मापन कर पाना। ☐ अमानक इकाइयों से ☐ मानक इकाइयों से					
बड़ी व छोटी इकाइयों के बीच अन्तर्सम्बन्ध को समझ पाना। ☐ अमानक इकाइयों से ☐ मानक इकाइयों से					
मानक इकाइयों के अनुप्रयोग की समझ बना पाना तथा परिमाप व क्षेत्रफल के अन्तर को समझ पाना। (केवल कक्षा 5 के लिए)					
आँकड़ों का प्रबन्धन एवं पैटर्न की समझ	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
रंग, आकार व आकृति के आधार पर बने पैटर्न खोज एवं बढ़ा पाना। ☐ चित्रों से ☐ चित्रों की संख्याओं में ☐ परिवेशीय डिज़ाइनों में					
रंग, आकार व आकृति के आधार पर नए पैटर्न बना पाना। ☐ चित्रों से ☐ चित्रों की संख्याओं में ☐ परिवेशीय डिज़ाइनों में					
संख्याओं में पैटर्न को खोजना, बढ़ाना एवं नए पैटर्न बनाना। ☐ संख्या रेखा पर ☐ जोड़–घटाव पर आधारित ☐ गुणा–भाग पर आधारित ☐ पहेलीनुमा					
दैनिक जीवन की घटनाओं के आँकड़ों का प्रबन्धन कर पाना। ☐ संकलन ☐ संगठन ☐ आलेख निरुपण ☐ विश्लेषण					

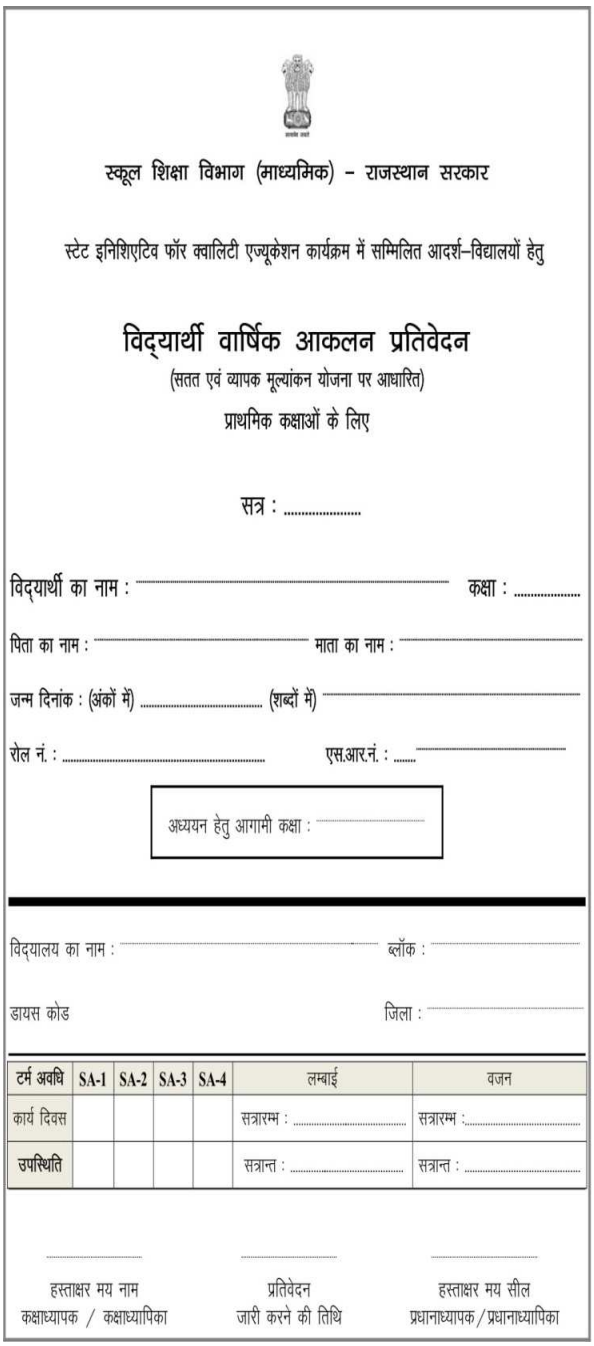
उच्च स्तरीय उद्देश्यों हेतु आकलन बिन्दु		SA-2	SA-4
गणितीय तर्कशीलता एवं अधिसंज्ञान	कक्षा स्तर		
	समेकित ग्रेड		
सवालों को हल करने के वैकल्पिक तरीकों को समझ पाना।			
स्वयं प्रयास करके नए सवाल बना पाना।			
सवालों को हल करने में अन्य साथियों की सहायता कर पाना। (ना केवल उत्तर बता पाना बल्कि उदाहरणों से समझ पाना।)			
सवालों में की गई त्रुटि के स्रोत (मूल कारण) को पकड़ पाना।			
स्वयं के स्तर पर अपनी गलतियों की समीक्षा एवं सुधार कर पाना।			
गणितीय संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति	कक्षा स्तर		
	समेकित ग्रेड		
सवालों को स्वयं ने कैसे हल किया इसे समझ पाना।			
अन्य द्वारा समझाए गए हलों/समाधानों को सुनकर समझ पाना एवं समस्या समाधान में लागू कर पाना।			
गणित के प्रति रुझान	कक्षा स्तर		
	समेकित ग्रेड		
गणितीय समस्याओं/प्रश्नों को हल करने में आनन्द ले पाना।			
नई समस्याओं/प्रश्नों को हल करने में आत्मविश्वास एवं इच्छा प्रकट कर पाना तथा नई समस्याएँ बनाकर हल कर पाना।			
किसी समस्या/प्रश्न को हल करने का सम्पूर्ण प्रयास जारी रख पाना एवं आसानी से बीच ही में नहीं छोड़ पाना।			

नाम : ———————— हस्ताक्षर : ————————

विषय अध्यापक/अध्यापिका :

विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन

विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन विद्यार्थी को सत्र उपरांत प्रदान किया जाएगा। इस प्रपत्र में विद्यार्थी से संबंधित व्यक्तिगत सूचनाएँ एवं सभी विषयों (संज्ञानात्मक एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों) पर रही उपलब्धि का विवरण ग्रेड व समेकित टिप्पणी सहित उल्लेख किया जाएगा।



स्कूल शिक्षा विभाग (माध्यमिक) – राजस्थान सरकार

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन कार्यक्रम में सम्मिलित आदर्श–विद्यालयों हेतु

विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन

(सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना पर आधारित)

प्राथमिक कक्षाओं के लिए

सत्र : .....

विद्यार्थी का नाम : ..... कक्षा : .....

पिता का नाम : ..... माता का नाम : .....

जन्म दिनांक : (अंकों में) ..... (शब्दों में) .....

रोल नं. : ..... एस.आर.नं. : .....

अध्ययन हेतु आगामी कक्षा : .....

विद्यालय का नाम : ..... ब्लॉक : .....

डायस कोड ..... जिला : .....

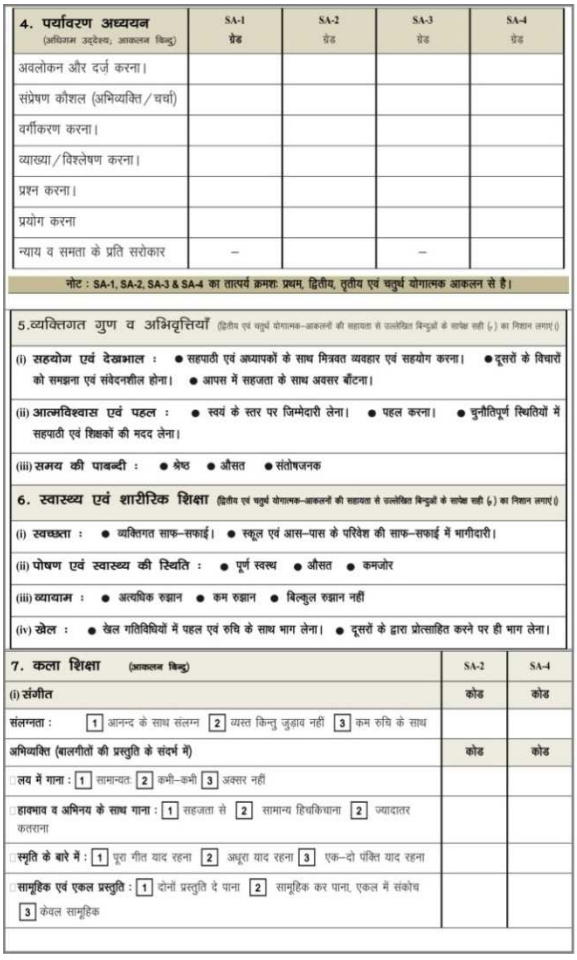
टर्म अवधि	SA-1	SA-2	SA-3	SA-4	लम्बाई	वजन
कार्य दिवस					सत्रारम्भ :	सत्रारम्भ : .....
उपस्थिति					सत्रान्त :	सत्रान्त : .....

....

हस्ताक्षर मय नाम कक्षाध्यापक / कक्षाध्यापिका | प्रतिवेदन जारी करने की तिथि | हस्ताक्षर मय सील प्रधानाध्यापक / प्रधानाध्यापिका

समेकित आकलन विवरण

1. हिन्दी (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
सुनकर समझना और समझकर बोलना								
पढ़ना और पढ़कर समझना								
लिखना								
व्यावहारिक व्याकरण (कक्षा 3 से लागू)								
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	–	–		–	–			
परिवेशीय सजगता	–	–		–	–			
2. गणित (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
आकृति एवं स्थान की समझ								
संख्या ज्ञान की समझ								
संक्रियाओं की समझ								
मापन की समझ								
आँकड़ों का प्रबन्धन एवं पैटर्न								
गणितीय तर्कशीलता एवं अधिसंज्ञान	–	–		–	–			
गणितीय संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति	–	–		–	–			
गणित के प्रति रुझान	–	–		–	–			
3. ENGLISH (Learning Objectives; Assessment Points)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
Listening with Understanding								
Speaking with Confidence								
Reading with Comprehension								
Writing								
Functional Grammar (Class 2 onwards)								



4. पर्यावरण अध्ययन (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	SA-1 ग्रेड	SA-2 ग्रेड	SA-3 ग्रेड	SA-4 ग्रेड
अवलोकन और दर्ज करना।				
संप्रेषण कौशल (अभिव्यक्ति/चर्चा)				
वर्गीकरण करना।				
व्याख्या/विश्लेषण करना।				
प्रश्न करना।				
प्रयोग करना				
न्याय व समता के प्रति सरोकार	–		–	

नोट : SA-1, SA-2, SA-3 & SA-4 का तात्पर्य क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ योगात्मक आकलन से है।

5.व्यक्तिगत गुण व अभिवृत्तियाँ (द्वितीय एवं चतुर्थ योगात्मक–आकलनों की सहायता से उल्लेखित बिन्दुओं के सामने सही (✓) का निशान लगाएं।)

(i) **सहयोग एवं देखभाल :** ● सहपाठी एवं अध्यापकों के साथ मित्रवत व्यवहार एवं सहयोग करना। ● दूसरों के विचारों को समझना एवं संवेदनशील होना। ● आपस में सहजता के साथ अवसर बाँटना।

(ii) **आत्मविश्वास एवं पहल :** ● स्वयं के स्तर पर जिम्मेदारी लेना। ● पहल करना। ● चुनौतिपूर्ण स्थितियों में सहपाठी एवं शिक्षकों की मदद लेना।

(iii) **समय की पाबन्दी :** ● श्रेष्ठ ● औसत ● संतोषजनक

6. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (द्वितीय एवं चतुर्थ योगात्मक–आकलनों की सहायता से उल्लेखित बिन्दुओं के सामने सही (✓) का निशान लगाएं।)

(i) **स्वच्छता :** ● व्यक्तिगत साफ–सफाई। ● स्कूल एवं आस–पास के परिवेश की साफ–सफाई में भागीदारी।

(ii) **पोषण एवं स्वास्थ्य की स्थिति :** ● पूर्ण स्वस्थ ● औसत ● कमजोर

(iii) **व्यायाम :** ● अत्यधिक रुझान ● कम रुझान ● बिल्कुल रुझान नहीं

(iv) **खेल :** ● खेल गतिविधियों में पहल एवं रुचि के साथ भाग लेना। ● दूसरों के द्वारा प्रोत्साहित करने पर ही भाग लेना।

7. कला शिक्षा (आकलन बिन्दु)	SA-2	SA-4
(i) संगीत	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति (बालगीतों की प्रस्तुति के संदर्भ में)	कोड	कोड
लय में गाना : 1 सामान्यतः 2 कभी–कभी 3 अक्सर नहीं		
हावभाव व अभिनय के साथ गाना : 1 सहजता से 2 सामान्य हिचकिचाना 2 ज्यादातर कतराना		
स्मृति के बारे में : 1 पूरा गीत याद रहना 2 अधूरा याद रहना 3 एक–दो पंक्ति याद रहना		
सामूहिक एवं एकल प्रस्तुति : 1 दोनों प्रस्तुति दे पाना 2 सामूहिक कर पाना, एकल में संकोच 3 केवल सामूहिक		

(ii) चित्रकला–दस्तकारी	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		
(iii) नाटक	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		
(iv) नृत्य	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		

समेकित अध्यापकीय टिप्पणी :

हस्ताक्षर विद्यार्थी

हस्ताक्षर अभिभावक

प्रतिवेदन एवं प्रविष्टियों के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण

1. यह प्रतिवेदन सत्र के अन्त में भरकर विद्यार्थियों को **प्रगति–पत्र** के रूप में दिया जाना है। पर्यावरण अध्ययन विषय कक्षा 3 से लागू है।
2. यह प्रतिवेदन विद्यालय में संधारित विद्यार्थी के **सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख पंजिका** के आधार पर तैयार किया गया है।
3. **योगात्मक आकलनों में अधिगम उपलब्धि स्तर के लिए** A , B अथवा C **ग्रेड दिए गए हैं। ग्रेड देने के आधार :** A = स्वतंत्र रुप से कार्य कर पाना या अपेक्षित स्तर की समझ/दक्षता होना ; B = शिक्षक की सहायता से कार्य कर पाना या मध्यम स्तर की समझ/दक्षता होना ; C = शिक्षक की विशेष सहायता से कार्य कर पाना या आरम्भिक स्तर की समझ/दक्षता होना।
4. **हिन्दी, गणित एवं अंग्रेजी विषय में प्रत्येक योगात्मक आकलन** के साथ **कक्षा–स्तर** का कॉलम दिया गया है। इस कॉलम में, विद्यार्थी के साथ संबंधित टर्म में जिस कक्षा स्तर की बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों पर कार्य किया गया है, उस कक्षा का उल्लेख किया गया है। कक्षा–स्तर का निर्धारण **आधार–रेखा आकलन** अथवा **पूर्व के योगात्मक आकलन** के आधार पर किया गया है।
5. **कला–** शिक्षा के आकलन में **ग्रेड** के स्थान पर क्षेत्र विशेष में विद्यार्थी की स्थिति के अनुसार **कोड** : 1 , 2 या 3 दर्ज किया गया है।
6. **आकलन कथन एवं प्रतिपुष्टि टिप्पणी** में सम्बन्धित विषय/क्षेत्र में विद्यार्थी की **सत्रांत अधिगम उपलब्धि** एवं उसके द्वारा की गई **प्रगति** का उल्लेख किया गया है। साथ ही वहाँ विद्यार्थी विशेष के संदर्भ में खास प्रतिपुष्टि (Feedback) को भी यथासम्भव दर्ज किया गया है।

पोर्टफोलियो

क्या : पोर्टफोलियो एक ऐसी फाइल है जिसमें विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्य के प्रतिनिधि नमूनों को व्यवस्थित कर लगाया जाता है। यह प्रत्येक विद्यार्थी की अलग–अलग फाइल होती है।

क्यों : प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने में हो रहे परिवर्तनों को अथवा प्रगति को शिक्षक, अभिभावक एवं बच्चों को स्वयं देखने व समझने के लिए पोर्टफोलियो को संधारित किया जाना आवश्यक है।

कैसे : प्रत्येक बच्चे के द्वारा किए जाने वाले विषय–क्षेत्रवार कार्यों के नमूनों को वर्गीकृत करके लगाया जाएगा। प्रत्येक नमूना–पत्रक शिक्षक द्वारा उद्देश्यों के सापेक्ष विश्लेषित करते हुए गुणात्मक टिप्पणी लिखकर लगाया जाएगा। इसको कक्षा–कक्ष में सुरक्षित स्थान पर रखा जाए, इनके संधारण में बच्चों की मदद ली जाए।

शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक शेयरिंग बैठक के दौरान पृष्ठपोषण

बच्चे की सीखने की स्थिति को अभिभावक के साथ प्रतिमाह बैठक में शेयर करना, उनसे बच्चे के सीखने के बारे में तथा विद्यालय की कार्य प्रक्रिया के बारे में रचनात्मक सुझाव प्राप्त करना इस प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

कब करें ? सीसीई स्कीम के तहत रचनात्मक आकलन का प्रतिमाह और योगात्मक आकलन की सत्र में दो बार (द्वितीय व चतुर्थ) शेयरिंग के समय इस बैठक को किया जाना है। उनके द्वारा दी गई प्रतिपुष्टि को सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख में नियत स्थान पर दर्ज किया जाएगा।

7. एस.आई.क्यू.ई. के अन्तर्गत संस्था प्रधान की भूमिका

विद्यालय की गुणवत्ता सुनिश्चित करने व प्रबन्धन में संस्था प्रधान सबसे प्रमुख भूमिका निभाते हैं। जैसा कि पहले भी इंगित किया गया है कि एसआईक्यूई परियोजना के क्रियान्वयन में संस्था प्रधान की भूमिका सबसे अहम् मानी जा रही है। इस इकाई में परियोजना के संदर्भ में संस्था प्रधानों की मुख्य भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है।

विद्यालय के विकास व गुणवत्ता सुनिश्चित करने के संदर्भ में संस्था प्रधान की भूमिका –

1. विद्यालय का यह लक्ष्य रखना कि सभी बच्चे सीखें –

संस्था प्रधान की यह मुख्य भूमिका है कि वह शिक्षक समूह के साथ यह लक्ष्य साझा करे कि विद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चे अपने उच्चतम स्तर तक विकसित हों व अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करें।

''बच्चों के संदर्भ में ऊँची अपेक्षाएँ रखना व उनके मध्य सीखने के अन्तरालों को कम करना विद्यालय का लक्ष्य होना चाहिए।''

2. सीखने हेतु सकारात्मक वातावरण तैयार/सुनिश्चित करना –

संस्था प्रधानों का यह दायित्व है कि वे शिक्षकों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करें कि 'विद्यालय में हर बच्चा सीखे' इस हेतु उपयुक्त वातावरण है। 'सकारात्मक वातावरण' से अभिप्राय कक्षा–कक्षीय वातावरण से है जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी, सहजता व सक्रियता से ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न हों। बच्चे प्रश्न पूछने, बातचीत करने, प्रश्नों का हल ढूँढने व स्वयं करके सीखने में सहज हों। बच्चों को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक विकास के भरपूर अवसर मिलें एवं वे विद्यालय आने व सीखने के प्रति उत्साहित हों। ऐसे वातावरण के निर्माण हेतु आवश्यक है कि शिक्षक भी कार्य के प्रति उत्साहित करें एवं करने में आनंद व संतोष का अनुभव करें। सीखना बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों के एक साथ एक दिशा में कार्य करने से ही बेहतर हो सकता है। अतः इनको साथ लेना व मार्गदर्शन देने का दायित्व संस्था प्रधान पर होता है।

3. दूसरे शिक्षकों/समुदाय में नेतृत्व की क्षमता का विकास करना –

शोधों ने इस बात को उजागर किया है कि जो संस्था प्रधान मिले–जुले नेतृत्व (सहभागी) की रणनीति से कार्य करते हैं, उनके विद्यार्थियों का सीखने का स्तर भी तुलनात्मक रूप से अच्छा होता है। अतः यह आवश्यक है कि संस्था प्रधान शिक्षक समूह के साथ मिलकर जिम्मेदारियों का विभाजन करें व मिलकर निर्णय लेने की प्रक्रिया को अपनाएँ। सभी शिक्षक विद्यालय के लक्ष्यों से सहमति रखे एवं उस ओर कार्य करने हेतु प्रेरित व तैयार हों।

4. गुणात्मक शिक्षण को सुनिश्चित करना –

यह आवश्यक है कि संस्था प्रधान इस बात से परिचित हों कि शिक्षकों को पढ़ाने का तरीका, तैयारी व परिणाम किस प्रकार के हैं। वह कक्षाओं का अवलोकन कर व आँकड़ों की सहायता लेते हुए शिक्षकों को उनके कार्य पर फीड बैक दें।

इस हेतु यह भी आवश्यक है कि वे स्वयं की क्षमतावर्धन पर निरंतर कार्य करें व स्वयं की समझ व कार्यप्रणाली को मॉडल रूप से प्रस्तुत करें।

उनको विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार हेतु किए जाने वाले कार्यों की अच्छी समझ होनी चाहिए। ताकि वे अकादमिक समर्थन भी दे पाएँ व साथ ही मॉनिटरिंग भी सुनिश्चित करें।

5. आँकड़ों का संधारण व प्रक्रियाओं की सुनिश्चितता –

संस्था प्रधान जो वस्तुनिष्ठता से अपने विद्यालय की प्रगति, चुनौतियों व गुणवत्ता के स्तर को समझने का प्रयास करते हैं, आँकड़ों का प्रयोग व्यवस्थित रूप से करते हैं। वे यह समझने की कोशिश करते हैं कि बच्चे कैसा सीख रहे हैं। उसकी उपस्थिति, प्रगति, इत्यादि हेतु आँकड़ों का प्रयोग करते हैं। आँकड़ों का प्रयोग शोध की दृष्टि से भी बहुत आवश्यक है। अच्छे संस्था प्रधान सामान्यतः निम्न चार प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं –

1. शिक्षण योजना निर्माण,
2. योजना का क्रियान्वयन,
3. योजना क्रियान्वयन हेतु समर्थन प्रदान करना
4. मॉनिटरिंग

संस्था प्रधान विद्यालय में कई अलग–अलग तरह की भूमिकाएँ वहन करते हैं –

संस्था प्रधान : शिक्षक के रूप में –

– स्वयं कक्षाकक्ष में बच्चों के साथ अध्यापन कार्य करने से वे शिक्षकों को आनी वाली समस्याओं को अधिक नजदीकी से समझ सकते हैं।

– वे स्वयं को समन्वित शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करें, यह प्रभावशाली नेतृत्व हेतु आवश्यक है।

संस्था प्रधान : सलाहकार रूप में –

संस्था प्रधान स्वयं की एवं शिक्षकों की क्षमता अभिवृद्धि हेतु अग्रसर रहते हैं तथा नए विचारों व ज्ञान को बाँटते हैं। यह भी आवश्यक है कि वे उस व्यवहार आदर्श रूप में प्रस्तुत करें जिसकी वे शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं। संस्था प्रधान की समझ इतनी गहन होनी चाहिए कि वे शिक्षकों को अकादमिक मुद्दों व समस्याओं के निदान हेतु सुझाव दे सकें।

संस्था प्रधान : व्यवस्थापक रूप में –

विद्यालय हेतु भौतिक संसाधनों को सुनिश्चित करें व साथ ही विद्यालय की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को समझें व उनकी पूर्ति हेतु अग्रसर रहें।

संस्था प्रधान : नेतृत्व प्रदान/मॉनिटरिंग के रूप में –

विद्यालय के लक्ष्यों व प्रक्रियाओं को साथ मिलकर तय करना व क्रियान्वित करना संस्था प्रधान की भूमिका का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्था प्रधान शिक्षकों के एक–दूसरे के मध्य सम्बन्ध, शिक्षकों व बच्चों के सम्बन्ध, समुदाय व विद्यालय के बीच अन्तःसम्बन्धों को सकारात्मक रखने की भूमिका में होते हैं। संस्था प्रधान के लिए विद्यालय व विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुसार सुविधाएँ इकट्ठी करना व उन्हें मुहय्या कराना भी महत्त्वपूर्ण है।

संस्था प्रधान का दायित्व आवश्यक नियमों व प्रक्रियाओं को शिक्षकों द्वारा जबरन लागू कराना नहीं है, अपितु लगातार संवाद की सहायता से उन्हें उन प्रक्रियाओं की आवश्यकता समझाते हुए, क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित करना है। यह रेखांकित करना भी आवश्यक है कि कुछ स्थितियों में प्रधानाचार्यों को कुछ अप्रिय कदम भी उठाने पड़ सकते हैं, लेकिन लक्ष्य विद्यालय की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना व विद्यालय में सीखने हेतु सकारात्मक वातावरण तैयार करना होना चाहिए।

समन्वित (SIQE) कार्यक्रम के संदर्भ में संस्था प्रधान की भूमिका

1. विद्यालय स्तर पर प्राथमिक कक्षाओं के लिए विषयवार शिक्षकों की व्यवस्था करना। गुणवत्ता से संबंधित राज्य सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं के लिए कक्षा 1 से 5 में एक शिक्षक द्वारा एक विषय का ही अध्यापन करवाया जाना सुनिश्चित करें।
2. विद्यालय में गतिविधि आधारित कार्यक्रम तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया के अनुसार कक्षा की शैक्षिक प्रक्रिया को सुनिश्चित करना। संस्था प्रधान शिक्षकों का उत्साहवर्धन करें और उन्हें समय–समय पर बताते रहें कि विद्यालय प्रशासन उनके सहयोग के लिए सदैव तत्पर है।
3. संस्था प्रधान नियमित रूप से कक्षा–प्रक्रिया एवं बच्चों की शैक्षिक प्रगति का अवलोकन करें।
4. अवलोकन के पश्चात् ही संस्था प्रधान नियमित रूप से प्रत्येक कक्षा के शिक्षक से पृथक–पृथक एवं सामूहिक संवाद करें और यह समझें की कक्षा में शिक्षण की प्रक्रिया और बच्चों के शैक्षिक स्तर में प्रगति की क्या स्थिति है। शिक्षकों को कक्षा–कक्ष में कार्य करने के दौरान किस तरह की चुनौतियाँ महसूस हो रही हैं।
5. संस्था प्रधान गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया संचालित करने का अर्थ सिर्फ फॉर्मेट भरना नहीं है। बच्चों की शैक्षिक प्रगति प्रथम एवं अंतिम उद्देश्य है। अतः कक्षा अवलोकन में पहले कक्षा–कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया का वातावरण, बच्चों की भागीदारी तथा उनकी शैक्षिक प्रगति का अवलोकन करें और उसके

बाद यह देखें की शिक्षक ने क्या तैयारी की थी? बच्चों की प्रगति को पाठ्यक्रम के अनुरूप सही दर्ज किया है या नहीं ? बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण योजना में बच्चों के शैक्षिक स्तर तथा पाठ्यस्तर के अनुरूप गतिविधियाँ शामिल की गई हैं अथवा नहीं ?

6. संस्था प्रधान प्रत्येक माह कम से कम एक बार कक्षा 1 से 5 में शिक्षण कराने वाले सभी शिक्षकों के साथ औपचारिक बैठक करें एवं कार्य प्रगति की समीक्षा करें।
7. शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान अनेक तरह की चुनौतियाँ आती हैं तथा प्रतिदिन नवीन अनुभव मिलते हैं अतः आवश्यक है कि शिक्षक को नियमित रूप से सहयोग एवं समीक्षा का अवसर मिलें। संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक शिक्षक प्रतिमाह संकुल स्तर पर होने वाली विषय कार्यशाला में भाग लें।
8. संस्था प्रधान शिक्षकों से संवाद कर यह सुनिश्चित करें कि मासिक कार्यशाला में जाने वाले शिक्षक कार्यशाला के लिए तैयारी करके जाएँ। इसके लिए शिक्षकों के पास अपने प्रश्न एवं अनुभव होने चाहिए। शिक्षक कार्यशाला में कम से कम दो या तीन बच्चों से संबंधित विषय की समस्त सामग्री लेकर जाएँ।
9. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें की कक्षा 1 से 5 तक गतिविधि आधारित शिक्षण तथा व्यापक एवं सतत मूल्यांकन प्रक्रिया लागू करने के लिए आवश्यक सामग्री/स्टेशनरी शिक्षक के पास उपलब्ध है एवं उस सामग्री का समुचित उपयोग कक्षा में किया जा रहा है।
10. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि यदि उनके विद्यालय के कोई शिक्षक या शिक्षिका संकुल स्तर पर होने वाली विषयवार कार्यशाला में दक्ष प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं तो वो नियमित रूप से प्रशिक्षक का कार्य करने के लिए उपलब्ध हों। जब वे प्रशिक्षण के कार्य के लिए बाहर हों तो विद्यालय के अन्य शिक्षक उनकी कक्षाओं में शिक्षण का कार्य तय योजनानुसार करवा रहे हों।
11. संस्था प्रधान शिक्षकों के प्रश्नों एवं चुनौतियों से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को समय–समय पर लिखित में अवगत कराएँ।
12. विद्यालय में गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के संचालन में आने वाली प्रशासनिक चुनौतियों के संबंध में जिला स्तरीय समन्वयन समिति को लिखित में अवगत कराना सुनिश्चित करें।
13. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि यदि उनके विद्यालय में किसी शिक्षक द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का श्रेष्ठ संचालन किया जा रहा है एवं बच्चों का शैक्षिक स्तर कक्षा स्तर के अनुरूप है तो उस शिक्षक के बारे में अधिक से अधिक विद्यालयों को जानकारी हो।

अन्य भूमिकाएँ

1. विषयगत मासिक कार्यशालाएँ–

- संकुल संदर्भ विद्यालय के संस्था प्रधान द्वारा मासिक कार्यशाला का आयोजन करना।
- अपने विद्यालय से भाग लेने वाले शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना।

- कार्यशाला समापन के बाद शिक्षकों से उसका फीडबैक लेना।
- संबंधित कार्यशाला स्थल पर कार्य की शेयरिंग करना/विषय से संबंधित सत्र लेना।
- ब्लॉक स्तर पर कार्यशाला तैयारी बैठक में भाग लेना व तैयारी में आवश्यक मदद करना।

2. जिला कोर कमेटी/जिला अकादमिक समूह–

- कार्यक्रम संचालन के लिए गठित जिला कोर कमेटी में सदस्य होने पर उनकी बैठकों में भाग लेना।
- कार्यक्रम की उपलब्धियों व अकादमिक समस्याओं की शेयरिंग करना।
- अनुभव आधारित अकादमिक समस्या समाधान के लिए सुझाव देना।
- जिले की अकादमिक योजना बनवाने में मदद करना।

3. संयुक्त पर्यवेक्षण व मूल्यांकन–

- ब्लॉक/जिले पर संयुक्त पर्यवेक्षण समूह का गठन करना।
- समन्वित विद्यालयों का पर्यवेक्षण कर आवश्यक संबलन प्रदान करना।
- मूल्यांकन हेतु जिला स्तर पर डाइट के साथ मिलकर प्रपत्र विकसित करना।
- मूल्यांकन से प्राप्त परिणामों को विद्यालय स्तर पर फीडिंग करवाना।

4. ब्लॉक/ग्राम स्तर पर मॉडल स्कूल के कार्य की समीक्षा करना –

- ब्लॉक स्तर होने वाली मासिक नोडल बैठक में अकादमिक समस्याओं पर बातचीत करना।
- विद्यालय और छात्रों की प्रगति की शेयरिंग करना।
- शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयास व उनको दिये गये संबलन की शेयरिंग करना।
- ग्राम पंचायत में स्थित अन्य विद्यालयों के शिक्षकों को शिक्षण व मूल्यांकन से संबंधित समस्याओं में मदद करना।
- छात्रों द्वारा किये गये काम को नोडल बैठक में प्रस्तुत करना।

5. सामुदायिक सहभागिता–

- एसएमसी की बैठकें नियमित करना।
- समुदाय एवं अभिभावकों के सामने बच्चों की प्रगति को प्रस्तुत करना।
- शिक्षकों के काम को प्रस्तुत करना।
- समुदाय/अभिभावकों को विद्यालय अवलोकन के लिए आमंत्रित करना।
- विद्यालय की प्रगति एवं बच्चों के सीखने के बारे में अभिभावकों से फीडबैक लेना।

कुछ प्रक्रियाएँ जिन्हें संस्था प्रधान विद्यालय की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु प्रयोग में ले सकते हैं–

1. **साप्ताहिक समीक्षा** : संस्था प्रधान के सानिध्य में शिक्षकों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक की जा सकती है। इस बैठक में सी.सी.ई. की प्रक्रियाओं जैसे– योजना निर्माण, गतिविधि आधारित

शिक्षण, चैकलिस्ट का प्रयोग, पोर्टफोलियो संधारण इत्यादि पर शिक्षकों के कार्य की समीक्षा की जा सकती है। इसके साथ ही कुछ अन्य पक्ष, जैसे–शिक्षकों को आ रही समस्याओं, कार्यशाला हेतु सुझाव, बच्चों के स्तरों इत्यादि पर चर्चा की जा सकती हैं। इन बैठकों के विवरण का एक रजिस्टर में व्यवस्थित रूप से दस्तावेज़ीकरण किया जा सकता है।

2. **कक्षा अवलोकन** : संस्था प्रधान साप्ताहिक/पाक्षिक रूप से सभी शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन कर उन्हें फीडबैक दे सकते हैं। शिक्षक एक–दूसरे की कक्षाओं का अवलोकन करके या अन्य विद्यालय के शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन कर अपनी क्षमता सम्वर्धन कर सकते हैं।

3. **टीचर डायरी व पोर्टफोलियो का अवलोकन/समीक्षा** : संस्था प्रधान शिक्षक योजना डायरी का अवलोकन करते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रख सकते हैं –

   - क्या आधार रेखा आकलन किया है एवं वह वस्तुनिष्ठ है?
   - क्या योजना में उद्देश्यों को व्यवस्थित रूप से लिखा गया है व इसके सापेक्ष गतिविधियों का संधारण किया गया है?
   - क्या उपसमूह शिक्षण, सामूहिक शिक्षण व व्यक्तिगत कार्य, तीनों तरह की रणनीतियों का विवरण दिया गया है?
   - क्या आकलन की योजना का विवरण दिया है ?
   - क्या योजना में कार्यपत्रकों एवं अन्य संदर्भ सामग्रियों का विवरण दिया है ?
   - क्या अपेक्षित स्तर से नीचे के स्तर पर कार्य कर रहे बच्चों हेतु विशेष योजना बनाई गई है ?
   - समीक्षा कितनी सटीक है व कक्षा–कक्ष के वास्तविक अनुभवों के नजदीक है ?
   - क्या चैकलिस्ट में आकलन दर्ज है एवं वह बच्चों के वास्तविक स्तरों से सुसंगत है ?
   - पोर्टफोलियो में विषयवार एक पक्ष में कम से कम एक कार्यपत्रक लगाया गया है ?
   - क्या कार्यपत्रक जाँचे हुए हैं व उनमें सटीक टिप्पणी दर्ज है ?
   - क्या कार्यपत्रकों में प्रश्नों की विविधता है ?

4. **आँकड़ों का संधारण** : संस्था प्रधान विद्यालय की गुणवत्ता को समझने व जाँचने हेतु निम्न आँकड़ों/रिपोर्ट्स की सहायता ले सकते हैं –

   - **बच्चों की नियमितता एवं ठहराव** – विद्यालय (कक्षाओं) की मासिक औसत उपस्थिति व नियमितता कम से कम 70 प्रतिशत तक होनी चाहिए। बच्चों के विद्यालय में ठहराव से सम्बन्धित आँकड़ों को व्यवस्थित करना व स्थिति को निरंतर समझते व आँकते रहना। इस हेतु एक चार्ट डिस्प्ले कर माहवार आँकड़ों को दर्शाया जा सकता है।

कक्षा	कक्षा अध्यापक का नाम	कुल नामांकन	माह : जुलाई		माह : अगस्त		माह : सितम्बर	
			औसत उपस्थिति	नियमितता	औसत उपस्थिति	नियमितता	औसत उपस्थिति	नियमितता

- **बच्चों के सीखने के स्तर** – बच्चों के सीखने के स्तरों को भी व्यवस्थित रूप से चार्ट में प्रदर्शित कर डिस्प्ले किया जा सकता है। इससे बच्चों के सीखने की प्रगति की दर को समझा जा सकता है।

कक्षा	विषय	कुल नामांकन	बच्चों की संख्या (S1)			बच्चों की संख्या (S2)		
			कक्षा के अपेक्षित स्तर पर	कक्षा से एक स्तर नीचे	कक्षा से दो या अधिक स्तर नीचे	कक्षा के अपेक्षित स्तर पर	कक्षा से एक स्तर नीचे	कक्षा से दो या अधिक स्तर नीचे

5. **एस.एम.सी./अभिभावक बैठक** : अभिभावक बैठक व एस.एम.सी. बैठकों में एसआईक्यूई परियोजना के बारे में बताना, मूल्यांकन व पढ़ाने के तरीकों में आए बदलावों पर चर्चा करना व पोर्टफोलियो को शेयर करना।

6. **संदर्भ व्यक्तियों के सुझावों को लिखित रूप से व्यवस्थित करना** : जिला/ब्लॉक से अकादमिक समर्थन/मॉनिटिरिंग हेतु आए संदर्भ व्यक्तियों द्वारा परियोजना के संदर्भ में लिए गए सुझावों को लिखित रूप में व्यवस्थित रखना।

8. विद्यालय स्तर पर सीसीई व सीसीपी सम्बन्धित दस्तावेज़

सी.सी.ई एवं सी.सी.पी प्रक्रिया के अंतर्गत दस्तावेज़ों का अवलोकन संस्था प्रधान का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। सी.सी.ई एवं सी.सी.पी प्रक्रिया के अंतर्गत प्रयोग में लिए जाने वाले दस्तावेज़ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को इस प्रकार नियोजित करने के उद्देश्य से निर्मित किये गए हैं, ताकि उन्हें बाल–केन्द्रित बनाया जा सके एवं उनके द्वारा शैक्षिक प्रगति को सुनिश्चित किया जा सके। इस दृष्टि से सभी दस्तावेज़ कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया के साथ–साथ चलते हैं एवं उस प्रक्रिया से पृथक करके सही मायनों में अवलोकित नहीं किये जा सकते। इस कारणवश सी.सी.ई एवं सी. सी.पी प्रक्रिया के अंतर्गत दस्तावेज़ों के अवलोकन को सावधानीपूर्वक समझना ज़रूरी है। आइए, इस प्रक्रिया के अंतर्गत सम्मिलित सामग्री को देख एवं समझ लें;

एसआईक्यूई के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली सामग्री –

- विषयवार पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य पुस्तिका : कक्षा 1 से 5 तक
- अध्यापक योजना डायरी
  - ♦ विषयवार एवं कक्षावार
  - ♦ कक्षा 1 एवं 2 : हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित (3)
  - ♦ कक्षा 3 से 5 : हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित एवं पर्यावरण अध्ययन (4)
  - ♦ इसके अन्तर्गत निम्नांकित अवयव/प्रारूप सम्मिलित हैं –
    - – बच्चों के नाम एवं आधाररेखा से प्राप्त स्तर लिखने का स्थान
    - – योजना डायरी प्रयोग करने के निर्देश
    - – योजना प्रारूप
    - – समीक्षा प्रारूप
    - – रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट
    - – बुनियादी क्षमताओं की चैकलिस्ट
  - ♦ अध्यापक अभिलेख पंजिका –
    - – प्रति विद्यार्थी एक शीट
    - – 50 बच्चों हेतु प्रावधान (बच्चों के नामांकन के अनुसार संख्याओं का निर्धारण)
    - – सत्र के आरम्भ में एवं प्रत्येक योगात्मक आकलन पश्चात आकलन दर्ज किया जाएगा।

- रिपोर्ट कार्ड
  - प्रति विद्यार्थी एक कार्ड
- स्रोत पुस्तिकाएं
  - स्रोत पुस्तिका– 1. हिन्दी, पर्यावरण अध्ययन, कला एवं शारीरिक शिक्षा
  - स्रोत पुस्तिका – 2. गणित एवं अंग्रेजी

सामग्री का प्रयोग एवं समझ

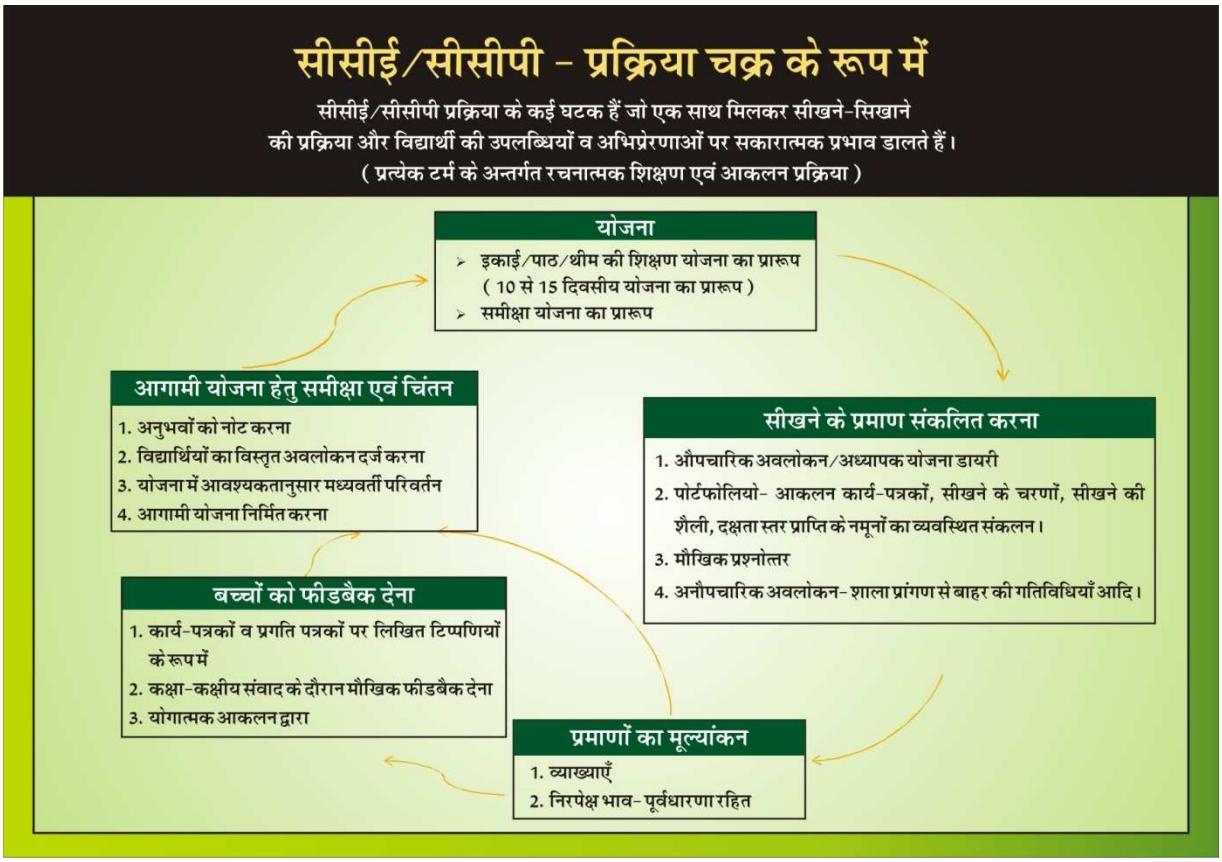
- सीसीई, सीसीपी सामग्री की समझ
  - सामग्री अपने सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को ठीक से नियोजित करने के लिए है।
  - यह प्रत्येक बच्चे के स्तर, आवश्यकता एवं प्रगति को सुनियोजित रूप से समझने एवं संधारित करने के लिए है।
  - इसका मूल उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया को बाल–केन्द्रित एवं गुणात्मक तौर पर बेहतर बनाना है।
- सीसीई, सीसीपी सामग्री मुख्य अवयवों की समझ –
  - विषयवार पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य पुस्तिकाएँ (पाठ्यक्रम एवं अधिगम उद्देश्यों की समझ एवं आकलन सूचकों के साथ इनके अंतर्सम्बन्धित को समझना)।
  - विषयवार एवं कक्षावार अध्यापक योजना डायरी प्रभावी शिक्षण, सतत आकलन, बच्चों के स्तर के अनुसार योजना एवं उसकी समीक्षा कर शिक्षण व प्रयासों में बदलाव कर पाना। आकलन और अधिगम उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण में समग्रता लाना।
  - यह सीसीई एवं सीसीपी प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है क्योंकि यही आकलन को सीधे एवं सतत रूप से शिक्षण से जोड़ता है।
  - प्रत्येक बच्चे का पोर्टफोलियो भी इस प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अवयव है (प्रत्येक बच्चे की प्रगति के सूचक कार्य को संधारित किया जाना है। जिस पर शिक्षक की टिप्पणी को पोर्टफोलियो में स्पष्ट रूप से अंकित किया गया हो।)

अगर इन सभी दस्तावेज़ों को गौर से देखें तो यह बात स्पष्ट रूप से उभर कर आती है कि प्रयोग की दृष्टि से अध्यापक योजना डायरी आधारभूत दस्तावेज़ है। इस दस्तावेज़ की खास बात यह है कि इसमें शिक्षण, आकलन और योजना (सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का नियोजन) एवं उसकी समीक्षा को एक–दूसरे के साथ व्यवस्थित एवं अंतर्संबंधित रूप से दिया गया है। यही चीज़ इस डायरी को प्रभावी रूप से; सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बाल–केन्द्रित बनाने एवं

उसका सतत रूप से विवेचन करने का सशक्त माध्यम बनाती है। नियमित अवलोकन की दृष्टि से यही सबसे प्रमुख दस्तावेज़ है जो आपको कक्षा–कक्ष में किये जा रहे कार्य को समझने में मदद करेगा।

दस्तावेज अवलोकन प्रक्रिया हेतु सुझाव :

सी.सी.ई एव ंसी.सी.पी आधारित कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया मूलतः सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, योजना एवं आकलन के एक चक्र के रूप में संचालित होती है। इस चक्र को निम्न डायग्राम द्वारा समझा जा सकता है :–



यहाँ यह रेखांकित करना आवश्यक है कि इन दस्तावेज़ों के अवलोकन का मूल लक्ष्य यह है कि शिक्षक बच्चों की आवश्यकताएँ पहचान पायें एवं उसके आधार पर आ रही चुनौतियाँ को सुलझाया जा सके।

यह चक्र मूलतः शिक्षण की पाक्षिक योजना का चक्र है जिसे दस्तावेज़ों के अवलोकन की धुरी बनाया जा सकता है। आगे दिये गए चरणों के द्वारा पूरी प्रक्रिया को पाक्षिक योजना के इर्द–गिर्द कुछ इस प्रकार बाँधा जा सकता है।

(क) प्रत्येक 15 दिनों में पाक्षिक शिक्षण योजना का अवलोकन करना। इस अवलोकन हेतु कुछ पूर्व तैयारी की ज़रूरत होगी। जिसके कुछ चरण निम्न प्रकार से हैं –

(अ) पहली पाक्षिक योजना को छोड़कर यह अपेक्षित है कि हर पाक्षिक शिक्षण योजना कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया के अवलोकन पर आधारित होगी।

(ब) इसी कारण यह भी अपेक्षित है कि हर बार पाक्षिक शिक्षण योजना का अवलोकन करने से पूर्व निम्न अवलोकन आवश्यक होंगे।

— पूर्व–पाक्षिक शिक्षण योजना में निश्चित किए गए पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य या लक्ष्य

— चैकलिस्ट में दर्ज कौशलवार आकलन।

— पूर्व–पाक्षिक शिक्षण योजना के अंतिम दो या तीन दिनों के दौरान किया गया कक्षा–कक्षीय अवलोकन एवं शिक्षक के साथ की गई बातचीत।

— इस बातचीत के बिन्दुओं का विवरण शिक्षकों के साथ बातचीत (Focused Group Discussion) वाले भाग में दिया गया है।

— शिक्षक द्वारा की गई समीक्षा

— पूर्व–पाक्षिक शिक्षण योजना के दौरान पोर्टफोलियो में संधारित बच्चों के कार्य। इस अवलोकन में बच्चों के शैक्षिक–स्तर एवं शिक्षक द्वारा दर्ज की गई टिप्पणी सबसे महत्त्वपूर्ण है।

इन पाँचों स्रोतों के अवलोकन के आधार पर निम्न बिन्दुओं पर अपनी पुख्ता समझ बना लें।

- बच्चों का वर्तमान शैक्षिक स्तर कैसा है ?
- क्या पिछले 15 दिनों या एक महीने के दौरान कोई प्रगति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है ?

अवलोकनों के आधार पर कौन–कौन सी आवश्यकताएँ उभर कर आ रही हैं। इस के अंतर्गत दो प्रकार की आवश्यकताएँ उभर कर आएँगी जिसकी स्पष्ट समझ बनाना आवश्यक है।

प्रथम : ऐसी आवश्यकता जो कि सतत रूप से बनी हुई है।

दूसरा : ऐसी आवश्यकताएँ जो पिछली पाक्षिक योजना के दौरान उभर कर आई हैं।

- क्या कक्षा स्तर से पीछे चल रहे बच्चों में कुछ प्रगति हो पाई।
- शिक्षक को किस क्षेत्र में अधिक संबलन की जरूरत है।
- क्या सभी स्रोतों से प्राप्त आकलनों/ अवलोकनों में तारतम्यता है। अगर नहीं तो वह कौन से बिन्दु हैं जिन पर स्पष्टता बनाने की जरूरत है। इसके अंतर्गत उभरे किन विरोधाभासों पर शिक्षक के साथ चर्चा की जानी चाहिए। इस प्रक्रिया में यह समझने का पूरा प्रयास करें कि शिक्षक साथी ने क्या सोच कर एवं किन अनुभवों के आधार पर आकलन दर्ज किए हैं।

इन सभी बिन्दुओं पर स्पष्ट समझ बनाने के उपरांत ही आप ठीक से शिक्षण योजना का अवलोकन कर पाएँगे। ऊपर दिये गए बिन्दुओं के आधार पर यह देखने का प्रयास करें कि प्रस्तावित शिक्षण योजना में उन्हें संबोधित किया गया है। इससे इतर कुछ और मुख्य बिन्दुओं का भी अवश्य ध्यान रखें; ये बिन्दु निम्न प्रकार हैं।

(अ) क्या बच्चों के स्तर के अनुसार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य निश्चित किये गए हैं।

(ब) क्या स्पष्ट रूप से गतिविधियों एवं शिक्षण–अधिगम सामग्री का उल्लेख किया गया है।

(स) कक्षा स्तर से पीछे चल रहे बच्चों के लिए विशेष गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।

(द) कक्षा स्तर से पीछे चल रहे बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया है।

चैकलिस्ट संबंधित कुछ मुख्य बातें :

— चैकलिस्ट में दिये गए आकलन के किन–किन सूचकों में आकलन किया गया है। क्या कक्षा–स्तर से पीछे चल रहे बच्चों का आकलन (कक्षा–स्तर की चैकलिस्ट में भी दर्ज किया गया है।)

— चैकलिस्ट में किन कौशलों के अंतर्गत अभी भी बच्चे पिछड़ रहे हैं।

— क्या चैकलिस्ट में आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के साथ–साथ हो रहा है।

पोर्टफोलियो के अन्तर्गत बच्चे द्वारा किए गए स्तर/प्रगति सूचक कार्य का संकलन होना है इनका अवलोकन करते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है।

— क्या पोर्टफोलियो में बच्चों के द्वारा किए गए प्रमुख कार्यो को सम्मिलित किया गया है जिनसे बच्चे की प्रगति का स्पष्ट रूप से पता लगता है।

— क्या बच्चों के इन प्रमुख कार्यों पर शिक्षक साथी ने स्पष्ट टिप्पणी दर्ज की है। इन टिप्पणियों में बच्चे ने क्या प्रगति की है और किन क्षेत्रों में अभी और संबलन की ज़रूरत है, उसे दर्ज किया गया है या नहीं।

— पोर्टफोलियो में आधार–रेखा आकलन एवं समेकित आकलन से अलग कार्यपत्रक एवं अन्य कार्यों को भी सम्मिलित किया गया है या नहीं।

9. अवलोकन प्रपत्रों के नमूने

अ. कक्षा अवलोकन प्रपत्र

शिक्षक/शिक्षिका का नाम : ———————————— विषेय : ———— कक्षा : ——

बच्चों की संख्या (नामांकित) : ———————————— उपस्थित : ————————

क्र. सं.	सूचक	अवलोकन–1 दिनांक :	अवलोकन–2 दिनांक :	अवलोकन–3 दिनांक :	अवलोकन–4 दिनांक : .....
1.	**शिक्षक के पढ़ाने का तरीका**				
	1. वर्कशीट एवं अन्य टी.एल.एम. की सहायता से (फ्लैश कार्ड/मॉडल/चार्ट..... आदि)				
	2. बातचीत				
	3. पाठ्यपुस्तक की सहायता से				
	4. पारम्परिक तरीके से बच्चों द्वारा बोर्ड से उत्तर उतारना				
2.	**बच्चों व शिक्षक के बीच अन्तर्सम्बन्ध**				
	1. सभी बच्चे भयमुक्त हैं व खुलकर भाग ले रहे हैं।				
	2. कुछ ही बच्चे भाग ले रहे हैं बाकी नहीं ले रहे। (आधे से कम)				
	3. अधिकतर बच्चे भाग नहीं ले रहे व शिक्षक के साथ कम सहज हैं।				
3.	**बच्चों की कार्य में संलग्नता एवं कक्षा–व्यवस्था**				
	1. कक्षा व्यवस्थित है व बच्चे कालांश के अधिकतर समय कार्य में संलग्न हैं।				
	2. बच्चे कार्य में संलग्न तो हैं पर यांत्रिक रूप से (श्यामपट्ट या किताब से देखकर लिखना इत्यादि)				
	3. बच्चे लगातार अन्य कार्यों जैसे आपस में बातें करना, इधर–उधर देखने में व्यस्त हैं व शिक्षक को बार–बार उन्हें कार्य करने को कहना पड़ रहा है।				

क्र. सं.	सूचक	अवलोकन–1 दिनांक :	अवलोकन–2 दिनांक :	अवलोकन–3 दिनांक :	अवलोकन–4 दिनांक : .....
	4. कुछ बच्चे सक्रिय हैं और कुछ नहीं।				
4.	**बच्चों व शिक्षक की बैठक व्यवस्था (कालांश के दौरान)**				
	1. बच्चे छोटे–छोटे उपसमूह बनाकर बैठे हैं व शिक्षक अलग–अलग उपसमूहों में जाकर जुड़ रहे हैं।				
	2. बच्चे व शिक्षक दोनों गोले में एक स्तर पर बैठे हैं।				
	3. बच्चे सीधी रेखाओं में बैठे हैं व शिक्षक कुर्सी पर।				
5.	**क्या पीछे रहे स्तर के बच्चों के साथ विशेष कार्य किया जा रहा है –**				
	1. योजना में भी था व कार्य के दौरान क्रियान्वित भी किया गया।				
	2. योजना में था पर पढ़ाने के दौरान नहीं कराया गया।				
	3. योजना ही नहीं बनाई गई।				
6.	**क्या उच्चस्तरीय पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों पर कार्य होता देखा गया।**				
	1. प्रश्न पूछना, चर्चा करना, खोज–बीन, निष्कर्ष निकालना इत्यादि प्रक्रिया बच्चों में घटित होती देखी गई (अधिकतम बच्चों में)				
	2. बीच की स्थिति रही (सुधार हो सकता है।)				
	3. बहुत कम अवसर दिए गए।				
7.	**शिक्षक की तैयारी**				
	1. शिक्षक तैयारी/योजना के साथ काम करते नजर आए।				
	2. तैयारी थी पर बहुत पुख्ता नहीं थी।				
	3. उसी समय सोचकर कार्य करवाया गया।				
8.	**कालांश के दौरान अवलोकित कक्षा से समझें कि क्या शिक्षक को अधिगम उद्देश्यों की समझ है–**				
	1. हाँ, काफी विस्तारित व पुख़्ता				
	2. थोड़ी बहुत, सामान्य				
	3. काफी कम				

ब. प्रक्रिया अवलोकन प्रपत्र

(इस हेतु टीचर–डायरी में लिखे उद्देश्यों को रैफर करें।)

क्र.सं.	प्रक्रिया	अवलोकन–1 दिनांक :	अवलोकन–2 दिनांक :	अवलोकन–3 दिनांक :	अवलोकन–4 दिनांक : .....
1.	**क्या आधाररेखा मूल्यांकन किया है –**				
	1. किया है। वस्तुनिष्ठ व सही है।				
	2. किया गया है पर पूर्ण रूप से सही नहीं है।				
	3. नहीं किया गया है।				
2.	**क्या शिक्षक लगातार शिक्षण योजना बनाता/बनाती है।**				
	1. हाँ, हर पाक्षिक योजना पूर्ण है।				
	2. बीच–बीच में अधूरी है।				
	3. योजना नहीं बनाई है।				
3.	**रचनात्मक आकलन किया गया है –**				
	1. चैकलिस्ट भरी गई है व काफी सही है।				
	2. भरी गई है पर ज्यादा वस्तुनिष्ठ नहीं है।				
	3. नहीं भरी गई है।				
4.	**पोर्टफोलियो**				
	1. व्यवस्थित है। वर्कशीट हैं, आकलित की हैं व टिप्पणी भी है।				
	2. व्यवस्थित है पर वर्कशीट आकलित नहीं हैं।				
	3. न के बराबर वर्कशीट हैं।				
5.	**योगात्मक आकलन**				
	1. कर लिया गया है व एक स्तर तक सही है।				
	2. किया गया है पर वस्तुनिष्ठ नहीं है।				
	3. अधूरा है।				
	4. नहीं किया गया है।				

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटी एज्यूकेशन

सभी बच्चों के लिए समान गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा का कार्यक्रम

सभी बच्चे सीख सकते हैं।

सभी शिक्षक सिखा सकते हैं।

RCSE

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल,

ब्लॉक-6, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302017